



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 163]

No. 163]

नई दिल्ली, बुधवार, जुलाई 28, 2004/श्रावण 6, 1926

NEW DELHI, WEDNESDAY, JULY 28, 2004/SRAVANA 6, 1926

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 27 जुलाई, 2004

अन्तिम जांच परिणाम

विषय: जापान, कोरिया गणराज्य और यूएसए मूल के अथवा वहां से निर्यातित स्टाइरीन बुटाडीन रबड़ (एसबीआर) 1900 श्रृंखला के आयात पर लगाए गए पाटनरोधी की सनसैट रिव्यू ।

सं. 15/5/2003-डीजीएडी.— यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आंकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए:

क. प्रक्रिया

1. सनसैट रिव्यू जांच शुरू करने के पश्चात् निम्नलिखित प्रक्रिया अपनायी गयी है:-

(क) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे आगे प्राधिकारी कहा गया है) ने दिनांक 3 जुलाई, 2001 की अधिसूचना सं. 34/1/2000-डीजीएडी द्वारा अधिसूचित मध्यावधि समीक्षा जांचों के अंतिम जांच परिणामों के अनुसरण में जापान, कोरिया गणराज्य और अमरीका मूल के अथवा वहां से निर्यातित स्टाइरीन बुटाडीन रबड़ (एसबीआर) के आयातों पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की सनसैट रिव्यू शुरू की थी । इस रिव्यू में दिनांक 3 जुलाई, 2001 की अंतिम जांच परिणाम(समीक्षा) अधिसूचना सं० 34/1/2000-डीजीएडी के सभी पहलू शामिल हैं ।

- (ख) प्राधिकारी ने जापान, कोरिया गणराज्य और अमरीका मूल के अथवा वहां से निर्यातित स्टाइरीन बुटाडिन रबड़ (एसबीआर) के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांचों के संबंध में 30 जुलाई, 2003 की अधिसूचना सं. 14/5/2003-डीजीएडी द्वारा इस सनसेट रिव्यू की जांच शुरुआत की अधिसूचना जारी की और उन ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को जांच शुरुआत अधिसूचना की एक प्रति अग्रेषित की जिनसे पत्र की तारीख के चालीस दिनों के भीतर उक्त जांच परिणामों पर अपने विचार, यदि कोई हों तो, प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था ।
- (ग) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों और उद्योग संघों (जिनका ब्यौरा याचिकाकर्ताओं द्वारा उपलब्ध करवाया गया था) को भेजी और उपर्युक्त नियम 6(2) के अनुसार उन्हें लिखित रूप में अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर दिया ।
- (घ) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की प्रति भारत में एसबीआर के सभी ज्ञात आयातकों एवं उपभोक्ताओं (जिनका ब्यौरा याचिकाकर्ताओं द्वारा उपलब्ध करवाया गया था) को भेजी और उन्हें पत्र की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर दिया ।
- (ङ) प्राधिकारी ने नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध देशों में एसबीआर के निम्नलिखित विनिर्माताओं को एक प्रश्नावली भेजी थी । तथापि, इन कम्पनियों ने निर्यात प्रश्नावली का कोई उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है:-

◆ अमेरीपोल सिनपोल कंपनी
146, हाई स्टेग्रीट,
अक्रोन, अहिओ 44308
अमरीका

◆ कोरिया कुम्हो पेट्रोकेमिकल कं० लि०
कुम्हो बिल्डिंग # 57 स्लुमुनोलन्ना
जोंग्रो गु
सिओल कोरिया

◆ मैसर्स निप्पोन जिओन कम्पनी लि०

फरूकवा-सोंगो बिल्डिंग

6-1 मारुनोची 2-चोम

चियोदा-कु

टोक्यो-100

जापान

◆ मैसर्स जेएसआर कारपोरेशन

2-11-24-टसुकजी

चौ-कु

टोक्यो 104

जापान

- (च) नई दिल्ली स्थित जापान, कोरिया गणराज्य और अमरीका के दूतावासों को नियम 6(2) के अनुसार जांच की शुरुआत के बारे में सूचना दी गई और उनसे यह अनुरोध किया गया कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली का जवाब निर्धारित समय के भीतर देने की सलाह दें। दूतावासों को ज्ञात निर्यातकों/आयातकों की एक सूची के साथ निर्यातक को भेजे गए पत्र तथा प्रश्नावली की एक प्रति भी भेजी गई थी। तथापि, किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है।

प्राधिकारी ने 9/10 दिसंबर, 2003 के पत्र द्वारा मैसर्स ऋषिरूप पॉलिमर्स प्रा० लि०, संबद्ध माल का एक आयातक, जिसे इस जांच से संबंधित सभी मामलों में अभ्यावेदन देने हेतु मैसर्स कोरिया कुम्हो पेट्रोकेमिकल कं० लि० (केंकेपीसी) द्वारा प्राधिकृत किया गया था, से निर्यातकों के उत्तर के पूर्ण अगोपनीय अंश प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था। प्राधिकारी ने 22 मार्च, 2004 के पत्र द्वारा यह दोहराया कि डब्ल्यूटीओ एडीए के अंतर्गत मैसर्स केंकेपीसी द्वारा एक अगोपनीय सारांश समेत निर्यातक प्रश्नावली का एक संपूर्ण उत्तर प्रस्तुत करना अपेक्षित हैं जो उन्होंने नहीं प्रस्तुत किया है। उन्हें जांच अवधि के दौरान के ओ एस

वाई एन के एचएस-68 के केकेपीसी के निर्यातों से संबंधित निर्यातक के सभी बीजक प्रदान करने का भी अनुरोध किया गया था। केकेपीसी को 5 अप्रैल, 2004 तक एक अगोपनीय सारांश के साथ निर्यातक प्रश्नावली का संपूर्ण उत्तर प्रस्तुत करने की सलाह भी दी गयी थी।

प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि मैसर्स केकेपीसी ने एक अगोपनीय सारांश के साथ निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया। मैसर्स ऋषिरूप पॉलिमर्स प्रा० लि०, मुंबई ने आयातक प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया।

(छ) नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगाने हेतु भारत में एसबीआर के निम्नलिखित आयातकों और/अथवा उपभोक्ताओं को एक प्रश्नावली भेजी गयी थी:-

- पैरागॉन रबड़ इंडस्ट्रीज
पो. बा. नं. 61, मत्तीथरा बिल्डिंग
बेकर जंक्शन, कोट्टायम
केरल
- टेक्सिम इन्टरनेशनल
1-3 ए, टेल्को इंडस्ट्रियल एस्टेट
माघवरम
मद्रास 600060
- बाइकोफ रबड़ इंडस्ट्रीज
चेलेम्बा पी.ओ.
पालमापुरम जिला
केरल-673634
दूरभाष-0494-401163
- मलाया ट्रेड इम्पेक्स प्रा. लि०
"रबड़ भवन", मलाया कार्नर
एम.सी. रोड, कोडिमता
कोट्टायम, केरल

- जोसको रबर्स
8/50 मूनार्लिगल
कालीकट-673032
- पैरागॉन पॉलिमर प्रोडक्ट्स प्रा० लि०
कनाकगिरी गांव
कक्कापलायम पीओ
सलेम 637504
- लीडर रबड़ इंडस्ट्रीज
इंडस्ट्रीज डवलपमेंट पॉट
वेस्ट हिल (कोझिकोडे)
कालीकट, केरल
- वीकसे रबड़ इंडस्ट्रीज
VII/ 248, एनएच-17 नल्लालम,
पंचायत, कोलथारा पीओ,
कोजिथोडे
केरल
- सफर रबर्स
बी सं.vi/ 37 आइक्कारघड्डी,
पीओ मल्लापुरम
केरल
- केरल फुटवियर प्रोडक्ट्स,
कालीकट टाइम्स झोम्पलेक्स
रेलवे स्टेशन लिंक रोड
कालीकट, केरल
- अरिहन्त रबड़ एण्ड कैमिकल्स
159, रविन्द्र सरनी
कलकत्ता 700007
- कैमी कलर एजेंसी
12 बोनफिल्ड लेन
कलकत्ता-700001

- विकिंग रबर्स प्रा0 लि0
Vii/ 612 माता शॉपिंग आर्केड,
थोडुपुझा
केरल
- बॉम्बे पिंगमेंट्स एण्ड एल्लाइड प्रोडक्ट्स
पालातिनाल बिल्डिंग
एमसी रोड, कोट्टायम
केरल
- निओ रबड़ फुट क्राफ्ट प्रा0 लि0
माता शॉपिंग आर्केड
थोडुपुझा इदुक्की जिला
केरल
- फुटकेयर रबड़ इंडस्ट्रीज
viii/ 5749(बी) पो. बा. सं. 3,
परातोडे, कांजीरपा,
कोट्टायम जिला
केरल
- प्रोस्टन इंडिया प्रा0 लि0
45-ए 1, द्वितीय फेस
पीन्या इंडस्ट्रियल एरिया
बंगलौर-560058
- महाराष्ट्र ट्रेडिंग कार्पोरेशन
137, रौदात ताहेरा मार्ग
137, रौदात ताहेरा मार्ग
मुंबई-3
- आल इंडिया रबड़ इंडस्ट्रीज एसोसिएशन
नार्थन रीजन
नई दिल्ली-110008

- (ज) प्राधिकारी ने सभी इच्छुक पार्टियों को अपने मत मौखिक रूप से 7 जून, 2004 तक प्रस्तुत करने का अवसर दिया। मौखिक रूप से मत प्रस्तुत करने वाली इच्छुक पार्टियों को मौखिक रूप से अभिव्यक्त मतों की लिखित दलीलें देने का अनुरोध किया गया था। पक्षकारों को विरोधी पार्टियों द्वारा अभिव्यक्त मतों की प्रतियां लेने और उसका खंडन यदि कोई हो, प्रस्तुत करने की सलाह दी गई थी।
- (झ) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए साक्ष्यों एवं तर्कों के अगोपनीय रूपों वाली एक सार्वजनिक फाईल, सभी हितबद्ध पार्टियों के लिए उपलब्ध कराई।
- (य.) याचिकाकर्ताओं एवं अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों पर इन जांच परिणामों में उचित ढंग से ध्यान दिया गया, दिनांक 7 जून, 2004 को प्राधिकारी द्वारा आयोजित सार्वजनिक सुनवाई में घरेलू उद्योग, निर्यातकों और आयातकों द्वारा किए गए लिखित अनुरोधों एवं अनुस्मारकों पर प्राधिकारी द्वारा अंतिम जांच परिणामों पर पहुंचने की दृष्टि से गुण-दोष आधार पर विचार किया गया है।
- (ट) केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीईसी) से संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरे उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था। डीजीसीआईएण्डएस, कोलकाता से भी प्रवेश संख्या एवं तारीख संबंधी बिलों, उद्गम देश, आयातित संबद्ध वस्तुओं के विवरण, आयातों की मात्रा एवं मूल्य तथा आयातकों के नाम एवं पते के साथ जांच अवधि के दौरान उक्त वस्तु के भारत में किए गए आयातों के सौदेवार ब्यौरे उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था।
- (ठ) पाटन एवं क्षति संबंधी जांच में 1 अप्रैल, 2002 से 31 मार्च, 2003 (12 माह) का समय लगा, जिसे "जांच अवधि" या "पी ओ आई" के रूप में संदर्भित किया गया है। क्षति के विश्लेषण के लिए संगत प्रवृत्तियों की जांच में 1999-2000 से जांच अवधि तक का समय शामिल था (क्षति विश्लेषण अवधि)।

(ड) संबंधित नियम 16 के अनुसार, इन जांच परिणामों के लिए आवश्यक 'समझे गए' तथ्यों/आधारों का ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों के समक्ष प्रकट कर दिया गया था और इस संबंध में प्राप्त टिप्पणियों पर इन जांच परिणामों में विधिवत् ढंग से विचार किया गया है। मै0 कोरिया कुम्हो, जो कोरिया गणराज्य का एक निर्यातक है, के प्रतिनिधि मै0 ऋषिरूप पॉलीमर्स से प्राप्त टिप्पणियों पर इन जांच परिणामों में विचार किया गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने प्रकटन विवरण पर अपनी टिप्पणियाँ नहीं दी हैं क्योंकि उन्होंने दिनांक 26 जुलाई, 2004 के अपने पत्र द्वारा प्राधिकारी को सूचित किया है कि वे माननीय उच्च न्यायालय नई दिल्ली के समक्ष लिखित याचिका दायर करना चाहते हैं जिसे 26 जुलाई, 2004 को दायर किया गया था।

(ढ) इस अधिसूचना में *** चिह्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना दर्शाता है जिसे नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा इसकी गोपनीयता से संतुष्ट होते हुए, गोपनीय समझा गया है।

ख. विचाराधीन उत्पाद

2. जांचाधीन उत्पाद जापान, कोरिया गणराज्य और अमरीका के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के सीमाशुल्क शीर्ष संख्या 3903.90 और 4002.19 के अंतर्गत वर्गीकृत स्टाईरीन बुटाडीन रबड़ (एसबीआर) 1900 श्रृंखला के सभी ग्रेड हैं। मूल जांच दिनांक 2/6/99 की अधिसूचना के द्वारा समाप्त हो गई थी जिसमें एसबीआर 1500, 1700 और 1900 श्रृंखला पर शुल्क की सिफारिश की गई थी। तथापि दिनांक 3 जुलाई 2001 की मध्यावधि समीक्षा संबंधी अधिसूचना के द्वारा शुल्क के दायरे को एसबीआर 1900 श्रृंखला तक सीमित कर दिया गया था।
3. तथापि, यह वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और यह वर्तमान निर्णायक समीक्षा के दायरे पर किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है।

विचाराधीन उत्पाद के संबंध में निर्यातक द्वारा अभिव्यक्त विचार:

4. मै0 ऋषिरूप पॉलीमर्स प्रा0 लि00 (कोरिया गणराज्य से विचाराधीन उत्पाद के निर्यातक का एक प्रतिनिधि आयातक) ने अपने दिनांक 7 अक्टूबर, 2003 के पत्र द्वारा जांच अवधि के दौरान केएचएस 68 के निर्यात सहित संबद्ध जांच के बारे में कुछेक गोपनीय अनुरोध किए थे। प्राधिकारी ने निर्यातक के उत्तर के अगोपनीय अंश और दिनांक 7 अक्टूबर 2003 के पत्र के लिए अनुरोध किया था जिसे 17 मई, 2004 को प्रस्तुत किया गया था। इस उत्तर के द्वारा निर्यातक ने अपने दिनांक 7 अक्टूबर 2003 के गोपनीय पत्र के अगोपनीय अंश की प्रतियाँ संलग्न की थीं। इसमें उन्होंने यह भी बताया है कि दिनांक 7 अक्टूबर 2003 के साथ संलग्न अनुबंधों का सार लेखन परीक्षणीय नहीं है क्योंकि ये गोपनीय प्रकृति के हैं।
5. विचाराधीन उत्पाद के बारे में, आयातक मै0 ऋषिरूप पॉलीमर्स ने अनुरोध किया है कि कोरिया गणराज्य से निर्यातक के के पी सी ने जांच अवधि के दौरान भारत को स्टाइरीन बुटाडीन रबड़ 1900 श्रृंखला का निर्यात नहीं किया है। परिणामस्वरूप, केकेपीसी ने समीक्षा जांच अवधि के दौरान भारत में एसबीआर 1900 श्रृंखला का कोई पाटन नहीं किया और इसके लिए कोई पाटन मार्जिन मौजूद नहीं है।
6. इसके अलावा, यह अनुरोध किया गया है कि केकेपीसी ने समीक्षा जांच अवधि के दौरान अपने ब्रांड नाम केओएसवाईएन के एच एस-68 जिसमें स्टाइरीन की मात्रा 68% होती है के अंतर्गत स्टाइरीन बुटाडीन को-पॉलीमर रेजिन के 410 मी.टन का निर्यात किया। इस संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी ने मूल जांच में पहले ही यह माना है कि केओएसवाईएन के एच एस-68 नामक उत्पाद एक कृत्रिम रेजिन है जो सीमाशुल्क उपशीर्ष संख्या 3903.90 के अंतर्गत वर्गीकृत है तथा यह विचाराधीन उत्पाद नहीं था। चूंकि यह उत्पाद एसबीआर 1900 श्रृंखला में नहीं आता है इसलिए केकेपीसी ने इसके बारे में कोई ब्यौरे प्रस्तुत नहीं किए हैं।
7. पूर्वोक्त के मद्देनजर यह अनुरोध किया गया है कि चूंकि केकेपीसी ने निर्णायक समीक्षा जांच अवधि के दौरान जांचाधीन उत्पाद का निर्यात नहीं किया, इसलिए वे समीक्षा जांच अवधि के दौरान केकेपीसी की स्थिति को दर्शाने वाले परिशिष्ट 7 के अलावा निर्यातक प्रश्नावली के किसी उत्तर को देना आवश्यक या

प्रासंगिक नहीं समझते हैं। निर्यातक प्रश्नावली के परिशिष्ट 7 के अनुसार आंकड़े गोपनीय रूप में संलग्न हैं।

प्राधिकारी द्वारा जांच

8. प्राधिकारी ने एसबीआर 1900 श्रृंखला के एक सदस्य के रूप में केएच एस-68 जिसे प्रचलित शब्दावली में हाई स्टाइरीन रबड़ या एचएसआर के रूप में जाना जाता है, के बारे में अपने रिकॉर्डों की समस्त सामग्री को नोट किया है। प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के बारे में प्रकटन विवरण के उत्तर में निर्यातक के अनुरोधों को भी नोट किया है। इस संबंध में प्राधिकारी 2 जून 1999 के अंतिम जांच परिणामों और 3 जुलाई 2001 के मध्यावधि समीक्षा संबंधी अंतिम जांच परिणामों में विचाराधीन उत्पाद पर अपने विचारों का स्मरण करते हैं। निर्यातक का यह तर्क कि केएचएस-68 विचाराधीन उत्पाद नहीं है और इसलिए वह इस जांच की विषयवस्तु नहीं है, पर पूर्ववर्ती मध्यावधि समीक्षा संबंधी जांच परिणामों में विस्तार से विचार किया गया है।
9. माननीय सीगेट ने 2.2.2000 के अपने निर्णय में यह नोट किया था कि पाटनरोधी शुल्क एसबीआर के सभी ग्रेडों पर लागू हैं भले ही वे उपशीर्ष 4002 अथवा 3903 के अंतर्गत आते हों। सीमाशुल्क प्राधिकारियों ने वर्गीकरण पर ध्यान दिए बिना एसबीआर की सभी किस्मों पर शुल्क लगाया है।
10. चूंकि उपर्युक्त प्रावधानों में यथानिर्धारित किसी निर्णायक समीक्षा का प्रयोजन इस बात की जांच करने की जरूरत तक सीमित होता है कि क्या ऐसे शुल्क की समाप्ति से पाटन और क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है, इसलिए प्राधिकारी पूर्ववर्ती अंतिम और समीक्षा जांच परिणामों में विचारित विचाराधीन उत्पाद से संबंधित अपने जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं।

ग. समान वस्तु

11. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) में यह विनिर्दिष्ट है कि "समान वस्तु" का तात्पर्य ऐसी किसी वस्तु से है जो विचाराधीन उत्पाद के हर तरह से समानुरूप अथवा समान हैं अथवा ऐसी किसी वस्तु के अभाव में ऐसी अन्य वस्तु से है जिसकी विशेषताएं जांचाधीन वस्तुओं से अत्याधिक मिलती जुलती हों।

12. इस बात का खण्डन करते हुए कोई तर्क नहीं दिया गया है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित एसबीआर 1900 की विशेषताएं आयातित उत्पाद से अत्यधिक मिलती जुलती हैं और वह वाणिज्यिक एवं तकनीकी दृष्टि से संबद्ध देशों से आयातित एसबीआर की प्रतिस्थापनीय है।
13. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित एसबीआर 1900 श्रृंखला को नियम 2(घ) के अर्थ के भीतर जापान, कोरिया गणराज्य और यूएसए से निर्यातित उत्पाद के समान वस्तु माना गया है।
14. प्राधिकारी समान वस्तु के बारे में पूर्ववर्ती अंतिम और समीक्षा जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं।

घ. घरेलू उद्योग

15. मै0 अपार इंडस्ट्रीज लि0, अपार हाउस, कारपोरेट पार्क, सियान-ट्राम्बे रोड, चैम्बूर मुम्बई-400071 और मै0 एपोटेक्स लेटेसेस लि0, मुम्बई को पूर्ववर्ती अधिसूचना में घरेलू उद्योग माना गया था। प्राधिकारी ने सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आंकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली 1995 के अनुसार इन कंपनियों को घरेलू उद्योग माना है।

ड. जांच की अवधि

16. वर्तमान निर्णायक समीक्षा के प्रयोजनार्थ जांच की अवधि 1 अप्रैल 2002 से 31 मार्च, 2003 (12 माह) की है।

घ. निर्यातकों द्वारा किए गए अनुरोध

मै0 कोरिया कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स लि0 (केकेपीसी)/मै0 अद्विरूप पॉलीमर्स प्रा0 लि0

1. केकेपीसी स्टाइरीन बुटाडीन रबड़ एक्रिलोनाइट्राइल रबड़, बुटाडीन रबड़ सोल्यूशन एस बी आर, थर्मोप्लास्टिक रबड़, सिंथेटिक रेजिन, रबड़

रसायन, एसबी रेजिन और इलेक्ट्रॉनिक सामग्री आदि का उत्पादन करने वाली एक बहुउत्पाद बहु स्थानी विनिर्माण कंपनी है ।

2. केकेपीसी द्वारा एसबीआर, एनबीआर और एसबी रेजिनों का उत्पादन उनकी उल्सान सुविधाओं पर किया जाता है जबकि पोलीबुटाडिन रबड़, सोल्यूशन एसबीआर, थर्मोप्लास्टिक रबड़ बुटाडिन और स्टील का उत्पादन उनकी एशू संयंत्र सुविधा पर किया जाता है । इसके अलावा के के पी सी द्वारा स्वतंत्र स्थान पर पोलीस्टाइरिन, एसबीएस आदि जैसे सिंथेटिक रेजिन का उत्पादन किया जाता है और इस अलग स्थान पर रबड़ रसायनों का भी उत्पादन करता है ।
 3. अप्रैल 2002 से मार्च, 2003 तक की जांच अवधि के लिए परिशिष्ट 7 में केकेपीसी द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों से एसबीआर 1900 श्रृंखला के किसी उत्पादन अथवा बिक्री का स्पष्ट रूप से पता नहीं चलता है । उसमें दर्शाये गए आपंकड़े केवल 1500 और 1700 के अंतर्गत आने वाले एसबीआर के उत्पादन और बिक्री से संबंधित हैं । इसके अलावा उक्त परिशिष्ट 6 में आंकड़े स्टाइरिन बुटाडिन को पालीमर रेजिन " एस बी - रेजिन " के लिए प्रस्तुत किए गए हैं ।
 4. चूंकि केकेपीसी ने समीक्षा जांच अवधि के दौरान किसी 1900 श्रृंखला का कोई निर्यात नहीं किया था । इसलिए लागू पाटनरोधी उपायों को समाप्त किए जाने पर प्राधिकारी को पाटन और घरेलू उद्योग की परिणामी क्षति, यदि कोई हो, की भावी संभावना की जांच करनी पड़ी। पाटन की इस भावी संभावना के विश्लेषण को केवल केकेपीसी से संबंधित विभिन्न कारकों के परिप्रेक्ष्य में देखा जाना है जिसके लिए हम निम्नानुसार अनुरोध करते हैं-
- (क) केकेपीसी ने 2 से अधिक वर्षों के दौरान भारत को किसी एसबीआर 1900 श्रृंखला का निर्यात नहीं किया है और न ही ऐसा करने की उसकी मंशा है और इससे निकट भविष्य में घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हो सकती है अथवा उसका खतरा नहीं बन सकता है ।

(ख) केकेपीसी का एसबीआर उत्पादन के लिए उल्सान में अपनी मौजूदा सुविधाओं का विस्तार करने की कोई योजना नहीं है और इससे संबंधित संलग्न परिशिष्ट 7 में जैसा कि बताया गया है उल्सान संयंत्र में कुल पॉलिमर उत्पादन (एस बी आर, एनबीआर और एसबी रेजिन क्षमता *** मी.टन है जिसके विपरीत कुल पॉलिमर उत्पादन समीक्षा जांच अवधि के दौरान *** मी.टन का रहा है जो स्थापित क्षमता का *** प्रचालन अनुपात बनता है। यह अनुरोध किया गया है कि यह मामला होने के कारण यह स्पष्ट है कि केकेपीसी के पास एसबीआर, एनबीआर और एसबी रेजिन के अन्य ग्रेडों के लिए पर्याप्त आर्डर और बाजार हैं, ये सभी विभिन्न उत्पादन लाइनों पर उल्सान सुविधाओं पर उत्पादित किए जा रहे हैं। अतः के के पी सी के पास निकट भविष्य में एसबीआर 1900 श्रेणी के उत्पादन के लिए कोई बेशी क्षमता अथवा माल सूची नहीं है जिससे भारत को वृहत् पैमाने पर निर्यात और उसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को किसी वास्तविक क्षति अथवा क्षति का खतरा हो सके।

(ग) केकेपीसी ने अनुबंध ग में कैलेण्डर वर्ष 2002 जो कि इसका वित्तीय वर्ष है, के लिए आय एवं तुलन पत्र का लेखा परीक्षित विवरण प्रस्तुत किया है। आय के विवरण से यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है कि केकेपीसी एक लाभदायी कंपनी है और कैलेण्डर वर्ष 2002 के दौरान उसे कोई घाटा नहीं हुआ है। इसके अतिरिक्त, यह अनुरोध किया गया है कि जनवरी 2003 से मार्च 2003 की तिमाही के दौरान केकेपीसी के सभी प्रचालन लाभसादायक थे।

(घ) अनुबंध घ में जांच अवधि के लिए अमरीकी डालर बनाम कोरियन वॉन के विनिमय दर के निर्धारण के लिए आधार संलग्न किया गया है।

छ. आयातकों द्वारा किए गए अनुरोध

(I) आल इंडिया रबड़ इंडस्ट्रीज एसोसिएशन

1. अंतिम जांच परिणाम मध्यावधि समीक्षा में विनिर्दिष्ट प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र को ढाकर इस प्रकार दिया है "एसबी आर 1900 श्रृंखला के सभी ग्रेड अर्थात् हाई स्टाइरीन रेजिन मास्टर बैच...." जोकि आपत्तिजनक हैं।

2. हाई स्टाइरीन रेजिन मास्टरबैच एक व्यापक शब्द है जिसमें न केवल अध्याय 40 का स्टाइरीन ब्यूटाडीन रबड़ बल्कि अध्याय 39 के हाई स्टाइरीन रेजिन्स भी शामिल हैं।
3. विनिर्दिष्ट प्राधिकारी को अपने आवेदन में घरेलू उद्योग ने आवश्यक तथ्य प्रकट नहीं किए हैं। उन्होंने एसबीआर के आयात आंकड़ों, उत्पादन मात्रा जैसी अधिकतर महत्वपूर्ण सूचनाओं को 'गुप्त' रखा है।
4. एपार तथा एप्कोटेक्स, दोनों की ही प्रचालन दर अपने संयंत्र क्षमता उपयोग के लिए काफी ऊंची है और पूर्ववर्ती पिछली अवधि की तुलना में जांच अवधि के दौरान उत्पादन अथवा बिक्री में कोई गिरावट नहीं आई है।
5. एक तरफ वर्तमान ह्रासकारी परिस्थितियों में फुटवियर उद्योग चीन तथा अन्य दक्षिण एशियाई देशों की भावी चुनौतियों का सामना कर रहा है और दूसरी तरफ उसकी मूलभूत कच्ची सामग्री पाटनरोधी शुल्क के अध्यधीन है।
6. विचाराधीन उत्पाद का प्रयोग मुख्यतः फुटवियर उद्योग द्वारा किया जाता है जिसका प्रयोग जन साधारण द्वारा किया जाता है। फुटवियर द्वारा समाज के कमजोर वर्गों को रोजगार प्रदान किया जाता है। इसकी इकाइयों में से 98% लघु स्तरीय क्षेत्र में हैं।

(II) पैरागॉन रबड़ इंडस्ट्रीज

1. कंपनी कोर्टायम स्थित एक विनिर्माण इकाई है। उसके द्वारा रबड़ हवाई चप्पलों का विनिर्माण किया जाता है।
2. उनके द्वारा आयात किए जाने वाले स्टाइरीन रबड़ एस बी आर 860 का विनिर्माण मै0 जिऑन कॉरपोरेशन, जापान द्वारा किया जाता है और वे मै0 मित्सुबिशी कॉरपोरेशन के माध्यम से व्यापार करते हैं जो एशिया प्रशांत क्षेत्र में उनके एकमात्र बिक्री एजेंट है।

3. आयात के संसंबंध में विवरण प्रस्तुत किए गए हैं। कंपनी ने जांच अवधि के दौरान *** रू० के सी आई एफ मूल्य की *** कि.ग्रा. मात्रा का आयात किया है। इकाई सी आई एफ कीमत *** रू०/कि.ग्रा. है और पहुंच मूल्य *** रू०/कि.ग्रा. परिकलित होता है।

4. कंपनी ने देशी विनिर्माताओं से *** कि.ग्रा. की मात्रा भी प्राप्त की है। इकाई कीमत *** रू०/कि.ग्रा. परिकलित होती है।

(III) वाइकिंग रबड़ प्रा० लि०

1. कंपनी एसबीआर 1900 श्रृंखला की आयातक है।

2. उनके द्वारा जापान से आयात की गई मात्राओं का विवरण उनके द्वारा प्रस्तुत किया गया है। कंपनी ने जांच अवधि के दौरान *** रू० सी आई एफ मूल्य की *** कि.ग्रा. की मात्रा का आयात किया है। इकाई सीआईएफ कीमत *** रू०/कि.ग्रा. है और पहुंच मूल्य *** रू०/कि.ग्रा. परिकलित होता है। आयातित उत्पाद का उपयोग रबड़ हवाई चप्पलों के विनिर्माण के लिए किया गया है।

3. कंपनी ने 2000-01 में एफ्कोटेक्स लैटिसेस से *** रू० मूल्य की *** कि.ग्रा. मात्रा भी प्राप्त की है। इकाई कीमत *** रू०/कि.ग्रा. है परिकलित होती है। वर्ष 2001-02 में एफ्कोटेक्स लैटिसेस से *** रू० मूल्य की *** कि.ग्रा. की मात्रा प्राप्त की गई थी। इकाई मूल्य *** रू०/कि.ग्रा. परिकलित होता है। मै० एपार इंडस्ट्रीज से *** रू० मूल्य की *** कि.ग्रा. की मात्रा प्राप्त की गई थी। इकाई कीमत *** रू०/कि.ग्रा. परिकलित होती है।

ज. पाटन:

उदगम के देश में संबद्ध वस्तु के निर्यातक एवं आयातक

17. प्राधिकारी ने अनुच्छेद 9क (1) के अनुरूप संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियाँ भेजी थीं। निर्यातकों ने प्राधिकारी द्वारा उनको भेजी गई निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर में सूचना प्रस्तुत न करने के रूप में उत्तर नहीं दिया है। अतः,

सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत के बारे में संबद्ध देश के निर्यातकों द्वारा कोई दावे नहीं किए हैं । अतः प्राधिकारी क्रमशः सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत के बारे में "उपलब्ध तथ्यों" पर निर्भर करने के लिए बाध्य है ।

18. मै0 कोरिया कुम्हो (मै0 ऋषिरूप पॉलिमर्स के माध्यम से) ने अनुरोध किया है कि विनिर्दिष्ट प्राधिकारी ने केकेपीसी द्वारा गोपनीय रूप में प्रस्तुत किए गए आंकड़ों के सत्यापन के लिए कोई अनुरोध नहीं किया और यह समझा जाता है कि प्राधिकारी ने केकेपीसी द्वारा प्रस्तुत की गई सीमा तक आंकड़ों को विशुद्ध एवं उचित माना है ।

19. प्राधिकारी नोट करते हैं कि मौके पर जांच का मुख्य प्रयोजन निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर में उपलब्ध कराई गई सूचना का सत्यापन करना और यदि आवश्यक हो तो और ब्यौरे प्राप्त करना है । वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच में मै0 कोरिया कुम्हो ने निर्यातक प्रश्नावली का कोई उत्तर नहीं दिया है इसलिए प्राधिकारी मै0 कोरिया कुम्हो को असहयोगी मानते हैं । मै0 केकेपीसी ने अपने निवेदनों में यह कहा है कि उसने जांच अवधि के दौरान निर्णायक समीक्षा में जांचाधीन उत्पाद का निर्यात नहीं किया था इसलिए वह परिशिष्ट 7 को छोड़कर निर्यातक प्रश्नावली का कोई उत्तर प्रस्तुत करना आवश्यक अथवा संगत नहीं समझते हैं ताकि यह प्रदर्शित किया जा सके कि समीक्षा जांच अवधि के दौरान केकेपीसी ने क्या कार्य किए थे । इस प्रकार, निर्यातक प्रश्नावली के परिशिष्ट 7 के अनुसार आंकड़े गोपनीय रूप में संलग्न किए गए थे । बाद में निर्यातक ने स्पष्ट किया कि संक्षेपण किया जाना अनिवार्य नहीं था । आंकड़ों की शुद्धता और औचित्य प्राधिकारी द्वारा मालूम नहीं की जा सकी क्योंकि किसी निर्यातक की जांच सभी प्रकार से निर्यातक प्रश्नावली के पूरे उत्तर की अनुपस्थिति में नहीं की जा सकती । निर्यातक प्रश्नावली के पूरे उत्तर की अनुपस्थिति, जिसके फलस्वरूप मौके पर सत्यापन संभव नहीं था, में निर्दिष्ट प्राधिकारी केकेपीसी द्वारा प्रस्तुत सीमा तक आंकड़ों को डब्ल्यूटीओ एडीए और पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत शुद्ध और उचित मान कर स्वीकार नहीं कर सकते ।

सामान्य मूल्य

कोरिया गणराज्य

20. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि मै0 कोरिया कुम्हो ने निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा किए गए अनुरोध के अनुसार निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत करके निर्णायक

समीक्षा जांच में हिस्सा नहीं लिया है। मै0 ऋषिरूप पॉलिमर्स प्रा0 लि0 ने अपने 7 अक्टूबर, 2003 के पत्र के तहत समीक्षा जांच अवधि के दौरान केएसएस 68 के निर्यात सहित संबंधित जांच के बारे में कुछ गोपनीय निवेदन किए थे। प्राधिकारी ने निर्यातक के उत्तर का अगोपनीय रूपान्तर और 17 मई 2004 को प्रस्तुत किए गए दिनांक 7 अक्टूबर, 2003 के पत्र के लिए अनुरोध किया था। इस उत्तर के तहत निर्यातक ने अपने दिनांक 7 अक्टूबर 2003 के गोपनीय पत्र के अगोपनीय रूपान्तर की दो प्रतियाँ संलग्न की थीं। उन्होंने उसमें यह भी कहा था कि दिनांक 7 अक्टूबर 2003 के पत्र के साथ प्रस्तुत अनुबंध संपेक्षण के अध्यक्षीन नहीं हैं क्योंकि वे गोपनीय स्वरूप के हैं।

21. यह भी निवेदन किया गया है कि केकेपीसी ने जांच अवधि के दौरान अपने ब्राँड नाम कोसिन के अन्तर्गत 68% घटक वाले केएसएस 68 के 410 मी. टन स्टाइरीन ब्यूटाडीन को-पॉलिमर रेजिन का निर्यात नहीं किया था। मै0 केकेपीसी द्वारा यह निवेदन किया गया है कि निर्णायक समीक्षा जांच अवधि के दौरान जांचाधीन उत्पाद का निर्यात नहीं किया गया था इसलिए समीक्षा जांच अवधि के दौरान केकेपीसी के कार्यों की स्थिति को प्रदर्शित करने वाले परिशिष्ट 7 के अलावा वे निर्यातक प्रश्नावली का कोई उत्तर प्रस्तुत करना आवश्यक अथवा संगत नहीं समझते। इस प्रकार, निर्यातक प्रश्नावली के परिशिष्ट 7 में दिए गए आंकड़ों को गोपनीय रूप में संलग्न किया गया है।

22. निर्यातक प्रश्नावली का पूरा उत्तर प्रस्तुत करके मै0 केकेपीसी द्वारा भाग न लिए जाने के कारण प्राधिकारी को कोरिया गणराज्य में संबंधित वस्तु के सामान्य मूल्य के अपने निर्धारण में उपलब्ध तथ्यों पर विश्वास करने के लिए बाध्य होना पड़ा है। इस संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातक ने अपने 19 जून 2004 के लिखित निवेदनों में कहा था कि केकेपीसी ने निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष कई कार्रवाइयों में सहयोग दिया है और कई वर्षों के लिए एसबीआर तथा एनबीआर हेतु इसकी लागत पर केकेपीसी द्वारा नवीनतम निवेदनों, जिनमें एसबीआर प्रचालन की लागतें भी शामिल हैं, सहित पहले निर्णीत जांचों के रिकॉर्ड में उसकी लागत पर उपलब्ध हैं। केकेपीसी ने कहा है कि प्राधिकारी उनके समक्ष केकेपीसी द्वारा प्रस्तुत किए गए गोपनीय निवेदनों से केकेपीसी के लिए एसबीआर 1900 श्रृंखला को बनाने और बेचने की लागत का निर्धारण कर सकते हैं। प्राधिकारी ने अपनी जांच में उपलब्ध सूचना के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन किया है।

23. निर्यातक प्रश्नावली का पूरा उत्तर प्रस्तुत करके कोरिया गणराज्य से निर्यातकों द्वारा भाग न लेने के कारण प्राधिकारी कोरिया गणराज्य में संबंधित वस्तु के सामान्य मूल्य के निर्धारण में उपलब्ध तथ्यों पर विश्वास करने के लिए बाध्य रहे हैं।

घरेलू उद्योग ने अपने दिनांक 16 जुलाई और 21 जुलाई 2004 के निवेदनों में विनिर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा कोरिया गणराज्य में संबद्ध वस्तु के सामान्य मूल्य के निर्धारण में अपनाई गई पद्धति पर विवाद किया है। विनिर्दिष्ट प्राधिकारी ने कोरिया गणराज्य में सामान्य मूल्य परिकलित करने के लिए गुणावगुण आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए उत्तरों विचार किया है।

कच्ची सामग्री की लागतें जांचाधीन अवधि के लिए स्टाइरीन और ब्यूटाडीन की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों के अनुसार निर्धारित की गई हैं। कच्ची सामग्री की कीमत *** अमरीकी डालर/मी.टन परिकलित की गई है। खपत के मानदंड घरेलू मानदंडों के अनुसार स्वीकार किए गए हैं। कोरिया कुम्हो की वार्षिक रिपोर्ट 2002 से यथानिर्धारित एसजीए की मात्रा और वित्तीय लागत क्रमशः *** अमरीकी डालर/मी.टन और *** अमरीकी डालर/मी.टन परिकलित होती है। लाभ का घटक बिक्री का *** % परिकलित हुआ है।

इसलिए, कोरिया गणराज्य में संबद्ध वस्तु का सामान्य मूल्य *** अमरीकी डालर/मी.टन निर्धारित हुआ है।

जापान

23. आवेदकों ने "द जापान केमिकल वीक से जापान में सामान्य मूल्य के साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं। जापान केमिकल वीक के अनुसार एस बी आर हाई स्टाइरीन (60%) की कीमत जांच अवधि के दौरान *** येन के बीच थी तथापि इस कीमत के बीच कोई अंतर नहीं है जो कोरिया और अमरीका की तुलना किए जाने पर अवास्तविक रूप से अधिक भी मालूम होती है। इसलिए प्राधिकारी ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर जापान में संबद्ध वस्तु की लागत का परिकलन किया है।

24. अतः, जापान में संबद्ध वस्तु का सामान्य मूल्य *** अमरीकी डालर/मी.टन निर्धारित होता है।

अमरीका

25. प्राधिकारी को यह मालूम हुआ है कि अमरीका के निर्यातकों ने निर्धारित प्रारूप में प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है और सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन से संबंधित सूचना प्रस्तुत नहीं की है। इसलिए प्राधिकारी ने निर्यातकों को असहयोगी माना है और उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना के आधार पर आगे कार्रवाई की है।

26. आवेदकों ने अनुरोध किया है कि यू०एस०ए० में सामान्य मूल्य को एस०बी०आर० 1900 श्रृंखला की परिकलित उत्पादन लागत के आधार पर स्वीकार किया जाए। इन परिस्थितियों में प्राधिकारी परिकलित लागत का निर्धारण नहीं कर सका। प्राधिकारी ने उपलब्ध आंकड़ों और सबसे दक्ष घरेलू उत्पादक की मानकीकृत परिवर्तन लागत के अनुसार जांच अवधि के दौरान कच्ची सामग्री की अन्तर्राष्ट्रीय कीमत पर विचार किया है। उचित लाभ जोड़ने के बाद यू०एस०ए० में सामान्य मूल्य जांच अवधि के दौरान *** अमरीकी डालर/मी०टन अथवा 1 अमरीकी डालर = 48.63 रु० की विनिमय दर *** रु०/मी०टन माना गया है।

निर्यात कीमत:

कोरिया गणराज्य

27. प्राधिकारी के पास उपलब्ध आयात संबंधी सूचना के अनुसार संबद्ध वस्तु की भारत औसत सी०आई०एफ० कीमत *** अमरीकी डालर/मी०टन बनती है। प्राधिकारी ने अपने रिकार्डों में उपलब्ध समयोजनों पर विचार किया है। *** अमेरीकी डालर/मी०टन समुद्री भाड़े तथा *** अमेरीकी डालर/मी०टन के समुद्री बीमा पर विचार करने के बाद एफ०ओ०बी० कीमत *** अमेरीकी डालर/मी०टन बनती है। कमीशन *** प्रतिशत (*** अमेरीकी डालर/मी०टन), पैकिंग *** अमेरीकी डालर/मी०टन और अंतरदेशीय भाड़ा *** अमेरीकी डालर/मी०टन माना गया है। उपर्युक्त समायोजनों पर विचार करने के बाद कारखाना द्वारा पर निर्यात कीमत *** अमेरीकी डालर/मी०टन अथवा *** अमेरीकी डालर/मी०टन मांगी गई है।

जापान

28. मै० पैरागान रबर्स एवं मै० वाइकिंग रबर्स ने इन कार्यवाहियों में आवश्यक प्रश्नवली का उत्तर दिया है। रबड़ की हवाई चप्पलों का विनिर्माण करने वाली मै० पैरागान रबर्स इंडस्ट्रीज ने मै० जिआन कार्पोरेशन, जापान द्वारा विनिर्मित सिंथेटिक रबड़ एस०बी०आर० - एच०एस०-४६० का मै० मित्सुविशी कार्पोरेशन के जरिए किए गए आयातों के बारे में आंकड़े प्रस्तुत किए हैं। कंपनी ने जांच अवधिक के दौरान *** रु० के सी०आई०एफ० मूल्य की *** किग्रा की मात्रा का आयात किया है। यूनिट सी०आई०एफ० कीमत *** रु०/किग्रा है और पहुंच मूल्य *** रु०/किग्रा बनता है।

29. एस०बी०आर० 1900 श्रृंखला के एक आयातक मै० वाइकिंग रबर्स लिमिटेड ने जांच अवधिक के दौरान जापान से *** रु० के सी०आई०एफ० मूल्य के *** कि०ग्रा० का आयात किया है। यूनिट सी०आई०एफ० कीमत *** रु०/कि०ग्रा० है और पहुंच मूल्य *** रु०/कि०ग्रा० बनता है। आयातित उत्पाद का उपयोग रबड़ की हवाई चप्पलों के विनिर्माण में किया गया है।

30. इन आयातकों द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारत औसत सी०आई०एफ० कीमत *** रु०/कि०ग्रा० बनती है। पोलीमर्स, प्लास्टिक्स और रबड़ व्यापार आसूचना (पी पी आर) के आंकड़ों के अनुसार सी०आई०एफ०, आयात कीमत *** रु०/कि०ग्रा० है। प्राधिकारी ने पी०पी०आर० आंकड़ों पर ध्यान नहीं दिया है जो कि मामूली अधिक है और समूची

जांच अवधि को कवर करते हैं। प्राधिकारी ने रिकार्ड में उपलब्ध सूचना के अनुसार समायोजनों पर विचार किया है। समुन्द्री भाड़े (*** अमेरीकी डालर/मी०टन), ***% के समुन्द्री बीमा (*** अमेरीकी डालर/मी०टन) और ***% के कमीशन (*** प्रति मीटर) और समुन्द्री भाड़े *** प्रति मीटरी टन के लिये समायोजन किये गये हैं। अतः कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत जांच अवधि के दौरान 1 अमेरीकी डालर = 48.63 रुपये की औसत विनिमय दर *** अमेरीकी डालर/मीटन अथवा *** रुपये बनती है।

यू०एस०ए०

31. प्राधिकारी नोट करते हैं कि डीजीसीआईएस के सौदेवार आंकड़ों के अनुसार संबद्ध वस्तु की सीआईएफ कीमत असामान्य रूप से अधिक है और पीपीआर आंकड़ों के अनुसार कीमतें काफी कम हैं। यू०एस०ए० के संबद्ध वस्तु के किसी भी आयात ने आयातक प्रश्नावली का जवाब नहीं दिया है और इन कार्रवाईयों में यू०एस०ए० की आयात कीमत के बारे में सूचना नहीं दी है। निर्यातकों और आयातकों से सहयोग के अभाव में निर्यात कीमत निकालने के लिये प्राधिकारी ने उचित समायोजनों की अनुमति दी है।

32. उपलब्ध आयात संबंधी आंकड़ों के आधार पर प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तु की भारित औसत सीआईएफ आयात कीमत *** अमेरीकी डालर/मीटर मानी है। *** अमेरीकी डालर/मी०टन के समुद्री भाड़े ***% के समुद्री बीमा (*** अमेरीकी डालर/मी०टन), ***% के अंतर्देशीय भाड़े (*** अमेरीकी डालर/मीटन) और *** प्रतिशत के कमीशन *** अमेरीकी डालर/प्रति मी०टन पर विचार करने के बाद कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत जांच अवधि के दौरान एक अमेरीकी डालर = 48.63 रुपये की औसत विनिमय दर पर *** अमेरीकी डालर/मी०टन अथवा *** रुपये बनती है।

पाटन मार्जिन

33. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 में निर्धारित सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत एवं पाटन मार्जिन को निर्धारित करने वाले सिद्धान्तों को अपनाने की सुसंगत नीति का अनुपालन किया है। उपर्युक्तानुसार कारखाना द्वार पर सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के आधार पर प्राधिकारी ने नीचे दी गई तालिका के अनुसार कोरिया गणराज्य, जापान और यू०एस०ए० के सभी निर्यातकों के मामलों में पाटन मार्जिन का निर्धारण किया।

देश	उत्पादक/निर्यातक	पाटन मार्जिन (%)
कोरिया गणराज्य	सभी निर्यातक/उत्पादक	8.55%
जापान	सभी निर्यातक/उत्पादक	12.94%
यू०एस०ए०	सभी निर्यातक/उत्पादक	49.96%

पाटन जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना

34. सीमा शुल्क टेरिफ अधिनियम की धारा 9(क) 5 के अनुसार इस बात की जांच करना जरूरी है कि क्या उपायों को समाप्त करने से पाटन और क्षति के जारी रहने अथवा उनकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है। इस बात की जांच करते समय कि क्या पाटन जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है। प्राधिकारी ने इस आशय का सत्यापन किया है कि क्या इस समय पाटन मौजूद है और इस बात के सत्यापन का प्रस्ताव किया है कि क्या इस प्रकार के पाटन के जारी रहने अथवा पुनरावृत्ति होने की संभावना है।

1. जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तु के निर्यात पाटित कीमत पर किये पाये गये थे। इस निर्णायक समीक्षा जांच के लिये कोरिया, गणराज्य, जापान और यू0एस0ए0 के संबंध में निर्धारित पाटन मार्जिन को पूर्ववर्ती मूल्य और मध्यावधि समीक्षा जांच में निर्धारित मार्जिन से कम पाया गया।
2. इस बात की जांच करते समय कि क्या पाटन भारी मात्रा में जारी रहने की संभावना है, कुछ प्रकार की सूचना का विश्लेषण किया गया। इस जांच में संबद्ध देशों के निर्यातकों/उत्पादकों ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर देकर सहयोग नहीं दिया है। सभी सहयोगी कंपनी के अभाव में आयातों का विश्लेषण उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर किया गया है।
3. उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार यह देखा जाता है कि जांच अवधि के बाद की अवधि में कोरिया गणराज्य, जापान और यू0एस0ए0 से क्रमशः 720.08 मी0टन, 216.35 मी0टन और 135.39 मी0टन का निर्यात किया गया था।

भावी आयातों के बारे में अनुमान

1. कोरिया कुमहो पेट्रोकेमिकल्स लिमि0, जो कि कोरिया गणराज्य में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादकों में से एक है, की सिंथेटिक रबड के उत्पादन की वार्षिक क्षमता लगभग *** टन है। केवल एस0बी0आर0 की क्षमता *** टन है। इससे वह विश्व स्तरीय सिंथेटिक रबड के उद्योग की प्रमुख कम्पनियों में से एक कंपनी बन गई है।
2. पांच सिंथेटिक रबड उत्पादकों का हिस्सा विश्व के कुल क्षमता के एक तिहाई से अधिक बनता है। इनमें गुडईयर टायर एंड रबर कंपनी और जापान सिंथेटिक रबड कारपोरेशन, (जे0एस0आर) शामिल हैं। अन्य प्रमुख कंपनियों में अमरीकोल सिनपोल कापोरेशन तथा कोरिया कुमहो शामिल हैं। यू0एस0 इंडस्ट्री एंड ट्रेड आउटलुक R के अनुसार सिंथेटिक रबड उद्योग के अनेक कंपनियों का यह विश्वास है कि दक्षिण कोरिया में क्षमता और अधिक उत्पादन कार्यक्रम के अनुसार घरेलू मांग से 3 गुना अधिक हो सकती है। इसके अभिप्राय यह होगा कि निर्यात उत्पादन के लिये अभी भी पर्याप्त क्षमता उपलब्ध है जिसका उपायों की समाप्ति

की स्थिति में भारत को निर्यात बढ़ाने में प्रभावी रूप से उपयोग किया जा सकता है ।

3. भारतीय बाजार में प्रचलित कीमत स्तरों तथा इस तथ्य की कि समूची क्षति संबंधी विश्लेषण की अवधि में संबद्ध देशों से आयात जारी रहे हैं के मद्देनजर यह संभावना है कि निर्यात करने वाले उत्पादक उनके खोए बाजार हिस्सों को फिर से हासिल करने के लिये पाटित कीमतों पर बिक्री जारी रखेंगे ।
4. इस बारे में कोई सुझाव नहीं है कि जांच अवधि के लिये निर्धारित पाटित मार्जिन अथवा पाटित निर्यात समाप्त अथवा कम हो जायेंगे यदि उपायों को समाप्त कर दिया जाए । निर्यातक देशों में पर्याप्त क्षमताओं तथा इस तथ्य की कि इस जांचों में किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने प्राधिकारी को सहयोग नहीं दिया है, के मद्देनजर यह संभावित है ।

क्षति

35. उपरोक्त नियम 11, अनुबंध-II के तहत क्षति के बारे में किसी निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है तो इस प्रकार के निष्कर्ष में “ पाटित आयातों की मात्रा, घरेलू बाजार में समान वस्तुओं की कीमतों पर उनके प्रभाव तथा इस प्रकार की वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत तथ्यों पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण शामिल होगा ।” कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय यह जांच करना आवश्यक समझा जाता है कि पाटित आयातों के कारण भारत में समान वस्तुओं की कीमत की तुलना में कीमत में कोई उल्लेखनीय गिरावट आई है अथवा नहीं अथवा क्या इस प्रकार के आयातों से कीमतों में अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक गिरावट आई, अथवा कीमत वृद्धि में अन्यथा रुकावट आई है जो कि अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक बढ़ गई होती ।

36. नियम 11 के अनुबंध-I (iii) के अनुसार यह अपेक्षित है कि एक से अधिक देश से किसी उत्पाद के आयातों के मामले में जब पाटनरोधी जांच एक साथ की जा रही है तो प्राधिकारी इस प्रकार के आयातों का संचयी रूप से आंकलन करेगा । तथापि, इस प्रकार का आंकलन तभी किया जा सकता है जब यह निर्धारित हो जाए कि प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त 2 प्रतिशत से अधिक है और प्रत्येक देश से हुए आयातों की मात्रा भारत में समान वस्तु के आयात का 3 प्रतिशत है अथवा जहां प्रत्येक देश का निर्यात 3% से कम है वहां संचयी रूप से आयात समान वस्तु के आयातों का 7% से अधिक बनता है ; और आयातों के प्रभाव का संचयी आंकलन, आयातित वस्तु तथा समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों की दृष्टि से उचित है ।

37. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटन मार्जिन तथा संबद्ध देशों से हुए आयात, नियम 11 में निर्धारित सीमाओं से अधिक है ।

38. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों के आयातित उत्पाद, वास्तविक एवं तकनीकी दृष्टि से समान है। आयातित उत्पाद एवं घरेलू तौर पर उत्पादित उत्पाद प्रतिस्थापनीय है तथा भारत में समान अवधि के दौरान तुलनीय बिक्री माध्यमों के द्वारा इसका विपणन किया गया था तथा घरेलू उत्पादक तथा निर्यातक, उपभोक्तों की उसी श्रेणी को समान उत्पादन की बिक्री करते हैं।

39. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने नियम के/अनुबंध-II (iv) के अनुसार ऐसे संकेतकों पर विचार किया है, जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हैं जैसे:- उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, स्टॉक लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन इत्यादि।

(क) आयातों की मात्रा (पॉलीमर्स, प्लास्टिक्स तथा रबड़ व्यापार आसूचना के अनुसार):

मात्रा: मी०टन इकाई कीमत: ₹०/कि०ग्रा०

	1999-2000		2000-01		2001-02		2002-03	
	मात्रा	सीआईएफ	मात्रा	सीआईएफ	मात्रा	सीआईएफ	मात्रा	सीआईएफ
पीपीआर(मीटन) के अनुसार देशवार आयात अध्याय 39 तथा 40								
कोरिया जन०गण	2277.603	37.12	708.788	39.75	88.5	42.43	258.61	43.17
जापान	2353.392	39.38	2150.434	40.57	2204.78	44.69	2329.78	43.90
यू०एस०ए०	181.257	40.85	20.63	38.19	79.27	32.30	159.61	27.60
कुल(संबद्ध देश)	4812.252	38.38	2879.852	40.35	2370.55	45.87	2748	42.88
अन्य देश	136.96	36.17	1147.351	40.86	591.74	41.81	32.32	41.93
अध्याय 39 तथा 40 के तहत कुल आयात	4949.212	38.30	4027.203	40.50	2962.29	45.03	2780.32	42.87

40. पॉलीमर्स, प्लास्टिक्स तथा रबड़ व्यापार आसूचना (पीपीआर) आंकड़ों के अनुसार अध्याय 39 तथा 40 में आने वाले संबद्ध वस्तुओं के कुल निर्यात वर्ष 1999-2000 में 4949 मी०टन के स्तर से घटकर 2002-03 में 2780 मी०टन रह गए हैं।

41. डीजीसीआई एंड एस द्वारा उपलब्ध कराए गए सौदेवार आंकड़ों से यह देखा जा सकता है कि कोरिया गणराज्य/से, अध्याय 39 एवं 40 के तहत 14197522 करोड़ ₹० अथवा 41.68 ₹०/कि०ग्रा० मूल्य पर 340,600 कि०ग्रा की मात्रा का आयात किया गया। जापान से 68334836 रुपए अथवा 43.09 ₹०/कि०ग्रा० मूल्य पर 1585,904 कि०ग्रा० का आयात किया गया। यू०एस०ए० से 23, 43,253 रुपए अथवा 159.21 ₹०/कि०ग्रा० के मूल्य पर संबद्ध वस्तु की 14,718 कि०ग्रा० की मात्रा का आयात किया गया जो कि एक असामान्य कीमत है। तथापि पीपीआर आंकड़ों द्वारा सूचित 2780.32 मी०टन की तुलना में डीजीसीआई एंड एस द्वारा सूचित कुल मात्रा 1941 मी०टन है। गौण स्रोतों एवं डीजीसीआई एंड एस से प्राप्त आंकड़े सार्वजनिक फाइल में उपलब्ध कराए गए हैं।

(ख) मांग:-

मात्रा: मी0टन

	1990-00	2000-01	2001-02	2002-03
बिक्री				
भारतीय उद्योग की बिक्री	9060	12832	14031	13960
कुल आयात	4949	4027	2875	2780
आयात (संबद्ध देश)	4812	2879	2370	2748
आयात (अन्य स्रोत)	137	1148	591	32
मांग	14009	16859	16906	16740
मांग % में घरेलू उद्योग (याचिकाकर्ताओं) का हिस्सा	64.67%	76.11%	82.99%	83.39%
आयातों का % हिस्सा	35.33%	23.89%	17.00%	16.61%
पाटित आयातों का % हिस्सा	34.35%	17.08%	14.02%	16.42%
कोरिया जन गण का हिस्सा	16.26%	4.20%	1.53%	1.54%
जापान का हिस्सा	16.79%	12.75%	13.78%	13.92%
यू0एस0ए0 का हिस्सा	1.29%	0.12%	0.94%	0.95%
घरेलू उत्पादन	9223.529	12,469.553	14809.23	13642.54
उत्पादन की तुलना में कोरिया के आयातों का हिस्सा	24.69%	5.69%	0.58%	1.90%
उत्पादन की तुलना में जापान के आयातों का हिस्सा	25.52%	17.25%	14.89%	17.08%
उत्पादन की तुलना में यू0एस0ए0 के आयातों का हिस्सा	1.97%	0.17%	0.54%	1.17%
उत्पादन की तुलना में संबद्ध देशों से आयातों का हिस्सा	52.17%	23.10%	16.01%	20.14%
खपत की तुलना में संबद्ध देशों के आयातों का हिस्सा	34.35%	17.08%	13.95%	16.42%

42. वर्ष 1999-2000 में 14009 मी0टन से वर्ष 2000-01 में मांग में 16859 मी0टन की वृद्धि हुई है। तत्पश्चात मांग में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ है। मांग में घरेलू उद्योग का हिस्सा वर्ष 1999-2000 में 64.67% से बढ़कर वर्ष 2002-03 (जांच की अवधि) में 83.39% हो गया है। मांग में पाटित आयातों के हिस्से में वर्ष 1999-2000 में 34.35% से जांच अवधि में 16.42% की गिरावट आई है।

43. जांच अवधि में पाटित आयातों में उत्पादन की तुलना में 32.82 प्रतिशत तथा खपत की तुलना में 17.93 प्रतिशत की गिरावट आई है।

(ग) बाजार हिस्से में वास्तविक एवं संभावित गिरावट:-

44. बाजार हिस्से में परिवर्तन दर्शाने के लिए आंकड़ों को निम्नानुसार सारणीबद्ध किया गया है:-

		1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003
घरेलू उत्पादन	क	9223.529	12469.553	14809.23	13642.54
पाटित आयात	ख	4812.25	2879.852	2370.55	2748
अन्य आयात	ग	136.96	1147.351	591.74	32.32
कुल (क+ ख+ ग)	घ	14173	16497	17772	16423
बाजार हिस्से में परिवर्तन					
घ में परिवर्तन			+2324	+1275	-1349
क में परिवर्तन			+3246	+2340	-1167
ख में परिवर्तन			-1932	-509	+377
ग में परिवर्तन			+1010	-556	-559
धारित % हिस्सा					
घरेलू उत्पादन		65.08%	75.59%	83.33%	83.07%
पाटित वस्तु		33.95%	17.46%	13.34%	16.73%
अन्य आयात		0.97%	6.96%	3.33%	0.20%

45. उपर्युक्त सारणी से यह पता चलता है कि गत वर्षों के दौरान संबद्ध वस्तु की घरेलू उपलब्धता में वृद्धि हुई है, यद्यपि जांच अवधि के दौरान इसमें 7.87% की गिरावट आई थी। वर्ष 1999-2000 से लेकर वर्ष 2002-03 की अवधि तक घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में 17.99 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के बाजार हिस्से में उसी अवधि में 17.22% की गिरावट आई थी। पाटित आयातों द्वारा गंवाए गए बाजार हिस्से की पूर्ति घरेलू उद्योग द्वारा कर ली गई है।

(घ) उत्पादन एवं क्षमता उपयोग:

	1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-03
संस्थापित क्षमता (मी0टन)				
घरेलू उद्योग (कुल क्षमता)	15550	17800	18400	18400
उत्पादन (मी0टन)				
घरेलू उद्योग (कुल उत्पादन)	9223.529	12469.553	14809.23	13642.54
क्षमता उपयोग %				
घरेलू उद्योग (क्षमता उपयोग)	59.32%	70.05%	80.48%	74.14%

46. संबद्ध वस्तुओं के लिए क्षमता उपयोग में सुधार हुआ है। वर्ष 1999-2000 में घरेलू उद्योग की क्षमता अत्यंत थी जबकि पाटित आयातों की मात्रा उच्चतम थी। तत्पश्चात् पाटित आयातों की मात्रा में गिरावट के साथ क्षमता उपयोग में सुधार आया है। इस अवधि के दौरान खपत के स्तर में भी वृद्धि हुई है जिसके द्वारा घरेलू उद्योग को नई क्षमता में निवेश करने एवं क्षमता उपयोग के उच्चतर स्तरों को प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहन मिला है।

(ड.) बिक्री वसूली तथा आयातों की पहुंच कीमत:-

रु०/कि०ग्रा० (सूचीबद्ध)

वर्ष	घरेलू उद्योग की भारत औसत निवल बिक्री वसूली (रु०/कि०ग्रा०)	आयातों की पहुंच कीमत			
		कोरिया गणराज्य	जापान	यू०एस०ए०	अन्य
1999-00	100.00	100.00	100.00	100.00	100.00
2000-01	117.12	106.99	103.06	93.39	113.03
2001-02	112.89	111.40	110.62	77.15	112.86
2002-03 (जांच की अवधि) पाटनरोधी शुल्क के बिना	113.88	112.69	108.10	65.44	108.94
2002-03 (जांच की अवधि) मौजूदा पाटनरोधी शुल्क सहित		132.40	122.41	82.12	-

47. पाटनरोधी शुल्क के बिना संबद्ध देशों से पहुंच कीमत, घरेलू उद्योग की भारत औसत निवल बिक्री वसूली से अत्याधिक कम चल रही है।

(च) कीमत कटौती:-

रु०/कि०ग्रा० (सूचीबद्ध)

वर्ष	घरेलू उद्योग की भारत औसत निवल बिक्री वसूली	आयातों की पहुंच मूल्य		
		कोरिया गणराज्य	जापान	यू०एस०ए०
1999-00	100.00	100.00	100.00	100.00
2000-01	117.12	106.99	103.06	93.39
2001-02	112.89	111.40	110.62	77.15
2002-03	113.88	112.69	108.10	65.44

48. कोरिया गणराज्य, जापान तथा यू०एस०ए० से कीमत कटौती की सीमा 5% से 45% के बीच है।

(छ) कम कीमत पर बिक्री:-

रु०/कि०ग्रा०

वर्ष	एस०बी०आर० 1990 मूखला	आयातों का पहुंच मूल्य			कम कीमत पर बिक्री		
		कोरिया	जापान	यू०एस०ए०	कोरिया	जापान	यू०एस०ए०
2002-03 (जांच अवधि)							
घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत	***	***	***	***	***	***	***

कम कीमत पर बिक्री 12% से 50% के बीच थी।

(ज) लाभप्रदता:-

रु०/कि०ग्रा० (सूचीबद्ध)

याचिकाकर्ता	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03(जांच अवधि)
उत्पादन की लागत				
घरेलू उद्योग	100.00	113.93	88.02	103.66
बिक्री कीमत				
भास्ति औसत एन०एस०आर०	100.00	117.12	112.89	113.88
प्रभृति सूची बद्ध				
लाभ तथा हानि				
घरेलू उद्योग	(100.00)	(93.20)	73.51	(37.30)
प्रभृति सूची बद्ध				

49. उपर्युक्त तालिका से यह प्रदर्शित है कि उत्पादन की लागत में 1999-2000 के स्तर से 2000-2001 में वृद्धि हुई है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में मोनोमर कीमतों में वृद्धि के कारण कच्चे माल की लागत में लगभग प्रतिवर्ष वृद्धि दर्ज होती है। मोनोमर संबद्ध वस्तु के लिए प्रमुख कच्चा माल है तथा कच्चे माल की कुल लागत का 75-80% हिस्सा बनता है। वर्ष 2000-01 में पिछले वर्ष की तुलना में उत्पादन की लागत में वृद्धि हुई तथा संबद्ध देशों से आयातों के द्वारा प्रभावी कीमत कटीती जारी रही थी। इसीलिए, उच्चतर बिक्री वसूलियों के बावजूद घरेलू उद्योग को भारी घाटा उठाना पड़ा था। इसी वर्ष, आधार वर्ष की तुलना में मांग बढ़ी तथा घरेलू उद्योग ने अपनी बिक्री मात्रा में वृद्धि की। तथापि, कीमत के क्षेत्र में, वर्ष 2000 की भांति इसका घाटा बना रहा, ईंधन तथा पोलैण्ड से संबद्ध वस्तु का पाटन जारी रहा जिस पर अप्रैल, 2001 में पाटनसेवी शुल्क की सिफारिश की गई थी।

50. वर्ष 2001-2002 में कच्चे माल की कीमतें *** रु०/मी०टन से काफी घटकर *** रु०/मी०टन हो गई थी। संबद्ध देशों से कीमत कटीती की मात्रा क्षति विस्तार के क्षेत्र में पिछले वर्ष की तुलना में कम थी। जांच अवधि में इसके विपरीत हुआ तथा उद्योग को फिर से घाटा उठाना पड़ा था जो कि हालांकि तुलनात्मक रूप से कम था तथा इसमें 2000-01 के घाटे की तुलना में सुधार हुआ था। 1999-2000 के स्तर में लगभग *** रु०/मी०टन की वृद्धि से कच्चे माल की कीमतें *** रु०/मी०टन हो गई थी। कीमत कटीती के स्तर में भी पिछले वर्ष की तुलना में वृद्धि हुई थी।

51. जांच अवधि में, घरेलू उद्योग का मांग में हिस्सा 83.39% था जिसमें आधार वर्ष की तुलना में 18.72 प्रतिशत बिंदुओं की वृद्धि थी। पाटित आयातों का हिस्सा 1999-2000 में 34.35% से

घटकर 2000-01 में 16.42% हो गया अर्थात् आधार वर्ष की तुलना में यह गिरावट 17.93 प्रतिशत बिंदुओं की थी। इससे यह प्रदर्शित होता है कि पर्याप्त कीमत कटौती के बावजूद घरेलू उद्योग बाजार हासिल करने में तथा पाटित आयातों के द्वारा लिए गए बाजार को पुनः हासिल करने में समर्थ था क्योंकि पाटनरोधी शुल्क के साथ, कोरिया गणराज्य तथा जापान के मामले में कीमत कटौती समायोजित हो गई थी। तथापि, यूएसए के मामले में, यह देखा गया है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बावजूद पर्याप्त कीमत कटौती हो रही है।

(i) घरेलू उद्योग का अंतिम स्टॉक

मात्रा: मी0टन (सूचीबद्ध)

	1999-2000	2000-01	2001-02	2002-03
घरेलू उद्योग का अंतिम स्टॉक	100.00	31.20	174.08	113.66

52. प्राधिकारी घरेलू उद्योग द्वारा रखे गए स्टॉक के स्तर तथा उनकी बिक्री मात्रा एवं लाभप्रदता संबंधी स्थिति के मध्य कोई सह संबंध नहीं पाते हैं।

53. अंतिम स्टॉक की घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा के साथ तुलना की गई है तथा इसे नीचे दी गई तालिका में प्रतिशत के रूप में दर्शाया गया है:-

(ज) घरेलू उद्योग की बिक्री

सूचीबद्ध

	1999-2000	2000-01	2001-02	जांच अवधि
बिक्री (मी0टन)				
घरेलू उद्योग की कुल बिक्री	100	141.63	154.87	154.08
अंतिम स्टॉक				
घरेलू उद्योग का अंतिम स्टॉक	100	31.20	174.08	113.66
श्रृंखला रूप में बिक्री के प्रतिशत के रूप में भंडार सूची				
घरेलू उद्योग	5-10%	1-6%	5-10%	1-6%

54. यह देखा जा सकता है कि अंतिम स्टॉक में निरपेक्ष रूप से वृद्धि हुई है, तथापि पिछले वर्ष की तुलना में बिक्री के प्रतिशत के रूप में अंतिम स्टॉक में गिरावट आई है।

(ट) निवेश पर आय

लाख ₹ सूचीबद्ध

	1999-2000	2000-01	2001-02	2002-03(जांच अवधि)
निवल ब्लॉक पर विचार करते हुए लगाई गई पूंजी (लाख रुपए)				
घरेलू उद्योग	100.00	96.62	100.77	95.00
लाभ/हानि				
घरेलू उद्योग	(11.11)	(14.43)	16.20	(1.08)
लगाई गई पूंजी पर आय %				
घरेलू उद्योग	-11.11%	-14.94%	16.07%	- 1.14%

55. चूंकि घाटे में कमी आई है इसीलिए निवेश पर नकारात्मक आय भी कम हुई है। घरेलू उद्योग अब तक निवेश पर सकारात्मक आय प्राप्त करने की स्थिति में नहीं पहुंचा है।

(ठ) नगद प्रवाह/लाभ

सूचीबद्ध

	1999-2000	2000-01	2001-02	2002-03 (जांच अवधि)
घरेलू उद्योग का लाभ/हानि (रु/लाख)	(100.00)	(129.85)	145.73	(9.72)
घरेलू उद्योग का ह्रास (रु/लाख)	61.44	57.68	57.66	56.17
घरेलू उद्योग का नकद प्रवाह (रु/लाख)	(38.56)	(72.17)	203.40	46.45

56. यद्यपि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में घरेलू उद्योग का घाटा कम हुआ है तथापि यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग अभी भी घाटा उठा रही है। नकदी प्रवाह में सुधार हुआ है लेकिन इसमें पिछले वर्ष की तुलना में कमी आई है।

(ड) रोजगार एवं मजदूरी

मूल्य: लाख रुपए (सूचीबद्ध)

	1999-2000	2000-01	2001-02	2002-03
रोजगार (स्थाई)				
घरेलू उद्योग	100.00	100.00	90.83	92.20
मजदूरी				
घरेलू उद्योग	100.00	101.25	112.29	123.33

57. रोजगार स्तर में 1999-2000 की तुलना में 7.79% की गिरावट आई है मजदूरी में तीन वर्षों (1999-2000 से जांच अवधि तक) में 23.32% की वृद्धि प्रदर्शित हुई है जिसका तात्पर्य है 10% से कम की औसत वृद्धि जो कि सामान्य मजदूरी वृद्धि मानी जाती है। तथापि जांच अवधि में प्रति किलोग्राम उत्पादन मजदूरी में 1999-2000 की तुलना में *** रु की गिरावट आई है।

58. उपर्युक्त सूचना को निम्नानुसार दर्शाया गया है:-

सूचीबद्ध

	1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003
कर्मचारियों की संख्या	100.00	100.00	90.83	92.20
प्रतिशत परिवर्तन		0.00%	-9.17%	1.52%
कुल बिक्री (घरेलू उद्योग)	100.00	141.63	154.87	154.08
प्रति कर्मचारी बिक्री की मात्रा (मी0टन)	100.00	141.63	170.50	167.11

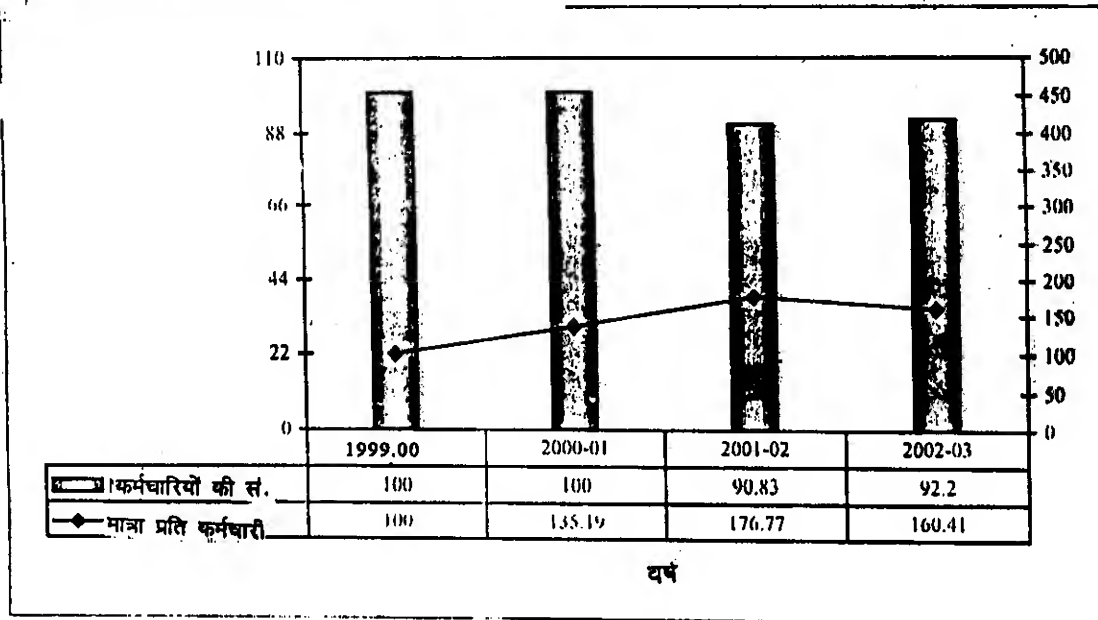
59. उपर्युक्त से यह पता चलता है कि प्रति कर्मचारी बिक्री की मात्रा में कुल मिलाकर वृद्धि हुई है।

(ब) उत्पादकता

सूचीबद्ध

	1999-2000	2000-01	2001-02	2002-03(जांच की अवधि)
उत्पादन (मी0टन)				
घरेलू उद्योग	100.00	135.19	160.56	147.91
कर्मचारियों की संख्या (कुल)	100.00	100.00	90.83	92.20
प्रति कर्मचारी उत्पादन (मी0टन)	100.00	135.19	176.77	160.41
घरेलू उद्योग (कुल)				

60. इसे निम्नलिखित ग्राफ चित्र में दर्शाया गया है:-



61. उपर्युक्त ग्राफ में यह दर्शाया गया है कि वर्षों के दौरान प्रति कर्मचारी उत्पादकता में बढ़ोतरी हुई है जो उत्पादन को इष्टतम बनाने और रोजगार को कम करने के लिए घरेलू उद्योग द्वारा किए गए प्रयासों के कारण तथा प्रचलित पाटनरोधी शुल्क के कारण बढ़े हुए उत्पादन और बिक्री मात्राओं में निर्दिष्ट है। तथापि जांच अवधि के दौरान उत्पादकता में पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में गिरावट आयी है। बढ़ी हुई उत्पादकता और पाटनरोधी शुल्क लगाने के बावजूद जांच अवधि में घरेलू उद्योग के वित्तीय कार्य-निष्पादन का लाभ की दृष्टि से ह्रास हुआ तथा घरेलू उद्योग द्वारा घाटा उठाना जारी रहा।

क्षति के जारी रहने या इसकी पुनरावृत्ति की संभावना

62. सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 9(क) 5 के अनुसार यह जांच करना आवश्यक है कि क्या उपायों की समाप्ति से पाटन तथा क्षति के जारी रहने या फिर से होने की संभावना है। इस बात की जांच करने में कि क्या क्षति के जारी रहने या फिर से होने की संभावना है, प्राधिकारी ने सत्यापन किया है कि क्या इस समय क्षति हो रही है और उनका यह सत्यापन करने का प्रस्ताव है कि क्या ऐसी किसी क्षति के जारी रहने या फिर से होने की संभावना है। क्षति निर्धारण के संबंध में यह देखा गया है कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से घरेलू उद्योग की स्थिति में सुधार हुआ है, इस प्रकार इसका वांछित प्रभाव पड़ा था।

1. संबद्ध देशों से आयातों पर शुल्क की पूरी अवधि में वास्तविक कीमत कटौती हुई। प्रदत्त शुल्क स्तर अर्थात् पाटनरोधी शुल्क सहित, पर निर्यात कीमतें घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत से कम थी जिसको मूल जांच में स्थापित किया गया था (***) -----रूपए ***/मी.टन) और जिससे शुल्क का स्तर निर्धारित हुआ था।

2. उपायों के अनुप्रयोग के प्रथम वर्ष में शुल्कों को लगाने के पश्चात घरेलू उद्योग की स्थिति ई यू और पोलैंड से क्षतिकारी पाटन के कारण विशेष रूप से 2000-01 से फिर से खराब हो गयी।

3. आयातक ने दावा किया है कि घरेलू उद्योग को क्षति पाटन से इतर अन्य कारकों के कारण हुई है जिनमें शामिल हैं (i) सीमाशुल्क में कमी; (ii) उच्च एन आर कीमतों के कारण एस बी आर 1900 श्रृंखला की कम मांग; (iii) अंतिम उत्पाद हेतु उपयोग पद्धति बदलकर ई वी ए/एल डी पी ई आधारित उत्पादों पर निर्भर होना; (iv) घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियां।

4. सीमाशुल्क में कमी के परिणामस्वरूप आयातों की पहुँच कीमत में परिवर्तन होंगे। हालांकि सीमाशुल्क में विश्लेषण अवधि के दौरान कमी आयी होगी, तथापि यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से पहुँच कीमतें उसी दायरे में रही हैं। प्राधिकारी ने पहुँच कीमत के स्तर पर विचार किया है। संबद्ध देशों से पहुँच मूल्य में आधार वर्ष की तुलना में अमरीकी आयातों को छोड़कर क्षति विश्लेषण अवधि के दौरान वृद्धि हुई थी और उनमें कमी सीमाशुल्क में कमी के कारण नहीं आयी थी। सीमाशुल्क में कमी क्षति का कारण नहीं है जिसे अलग किया जाना जरूरी है।

5. डब्ल्यू टी ओ ए डी ए के अनुच्छेद 3.5 में संगत कारणात्मक संबंध के मापदंड के रूप में "व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियों और विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा" का प्रावधान है। इसमें कारणात्मक संबंध के मापदंड के रूप में घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा का प्रावधान नहीं है। घरेलू उद्योग के दोनों अभिन्न यूनिट तुलनात्मक रूप से कम कीमतों पर बिक्री कर रहे हैं।

6. उपयोग पद्धति के बदलाव से घरेलू उद्योग और विदेशी उत्पादकों पर समान रूप से प्रभाव पड़ना चाहिए। प्राधिकारी द्वारा दिए गए आंकड़ों के विश्लेषण से यह पता नहीं चलता है कि घरेलू उद्योग की

उत्पादन क्षमता में उस सीमा तक कमी आयी है जो खपत में कमी के लगभग बराबर है जिससे यह पता चल सकता हो कि खपत पद्धति में बदलाव से कम बिक्रियां हुई हैं। इस मामले में मांग घरेलू उत्पादन और घरेलू उद्योग की बिक्री सभी में वृद्धि हुई है।

7. आयातों से यह मुद्दा भी उठा है कि एपकोटेक्स लैटिसिज लाभ कमा रहा है जबकि घरेलू उद्योग की एक अन्य यूनिट अर्थात् मै0 आपार इंडस्ट्रीज पाटनरोधी शुल्क लगाने के बाद भी घाटा उठा रही है। घरेलू उद्योग की कीमत *** ₹/मी.टन तक बढ़ाने का संरक्षण प्रदान किया गया है। किन्तु वह आपसी प्रतिस्पर्धा के कारण कीमतों को *** ₹/मी.टन से आगे बढ़ाने में असमर्थ रहा था। प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै0 एपकोटेक्स लैटिसिज टायर उद्योग, पेपर/बोर्ड कोटिंग उद्योग, वस्त्र उद्योग, कालीन एवं निर्माण उद्योग जैसे विभिन्न उद्योगों के लिए भिन्न-भिन्न ग्रेड के लैटिसों का विनिर्माण करता है। वार्षिक रिपोर्ट में दर्शाया गया लाभ समूची कंपनी के लिए है न कि संबद्ध वस्तु के लिए। जहाँ तक बढ़ती हुई कीमतों का संबंध है, घरेलू उद्योग पाटित आयातों के कारण बढ़ी हुई निविष्टि लागत को उपभोक्ताओं पर डालने में असमर्थ रहा है। निविष्टि लागत में वृद्धि हुई है किन्तु निर्यातकों ने वर्ष 1999-00 से निर्यात कीमतें वही रखी हैं।

8. जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति *** रूपए/किग्रा. रही थी। यदि पाटनरोधी शुल्क हटा दिया जाता है तो एन एस आर में कीमत कटौती अर्थात् *** प्रतिशत अथवा *** रूपए/किग्रा. तक की गिरावट आएगी। कच्ची सामग्री की कीमतें वर्ष 1999-00 में *** रूपए/मी.टन से 2002-2003 में बढ़कर *** रूपए/मी.टन तक हो गयी हैं। अतः कच्ची सामग्री की कीमत को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत लगभग *** रूपए/किग्रा0 होनी चाहिए। तथापि, यदि पाटनरोधी शुल्क को समाप्त कर दिया जाता है तो घरेलू उद्योग (कच्ची सामग्री में आगे कोई वृद्धि न होने का अनुमान लगाते हुए) *** रूपए/किग्रा. पर बिक्री करने के लिए बाध्य हो जाएगा। अतः जांच अवधि में बिक्री मात्रा के स्तर से कोई गिरावट न होने का अनुमान लगाते हुए कुल घाटा *** करोड़ रूपए का होगा।

9. उपर्युक्त को देखते हुए यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि यदि शुल्क समाप्त कर दिया जाता है तो क्षति के जारी रहने की संभावना है।

ज. क्षति एवं कारणात्मक संबंध के बारे में निष्कर्ष

63. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि में घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले कुछ आर्थिक संकेतकों में सुधार हुआ है। तथापि, घरेलू उद्योग घाटे की स्थिति में बना रहा है।

64. किसी आर्थिक मापदंड में सुधार मौजूदा पाटनरोधी शुल्क के परिणामस्वरूप हुआ है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह मानना अनुचित होगा कि यदि पाटनरोधी शुल्क समाप्त कर दिया जाता है तो संबद्ध देशों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति पहुँचना बंद हो जाएगा। घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति के जारी रहने की संभावना है क्योंकि क्षति विश्लेषण अवधि और जांच अवधि के दौरान घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु के आयात पाटित आयात कीमतों पर जारी रहे थे। इन पाटित आयातों से घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति में कमी हुई थी और वह जांच अवधि के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत से कम रही थी। प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले आर्थिक मापदंडों में से कुछ मापदंडों में हुए सुधार, यदि कोई हो, से पाटनरोधी शुल्क की समाप्त की अपेक्षा नहीं की जाती है।

ट. अंतिम जांच परिणाम

65. पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि;
- (क) कोरिया गणराज्य, जापान और यूएसए के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित स्टाइरिन ब्यूटाडिन रबड़ (एसबीआर) 1900 शृंखला का भारत को निर्यात उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है जिसके कारण पाटन हुआ है;
- (ख) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है;
- (ग) यदि पाटनरोधी शुल्क हटा लिया जाता है तो वास्तविक क्षति जारी रह सकती है और वह अधिक गंभीर हो सकती है।

66. अतः कोरिया गणराज्य, जापान और यूएसए के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित स्टाइरिन ब्यूटाडिन रबड़ (एसबीआर) 1900 शृंखला के आयातों पर लागू पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने की सिफारिश करना उचित समझा गया है। संशोधित शुल्क केन्द्र सरकार द्वारा इस सम्बन्ध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से लागू हो सकते हैं। पाटनरोधी शुल्क कॉलम 9 में उल्लिखित राशि होगी।

1. देश	2. उत्पादक/निर्यातक का नाम	3. राशि (अम. डा./कि.ग्रा.)
कोरिया गणराज्य	सभी उत्पादक/निर्यातक	0.0689
जापान	सभी उत्पादक/निर्यातक	0.1045
यूएसए	सभी उत्पादक/निर्यातक	0.197

67. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुँच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम 1962 के तहत सीमाशुल्क विभाग द्वारा यथाआकलित निर्धारण योग्य मूल्य होगा और उसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी सीमाशुल्क शामिल होंगे।

68. इस आदेश के खिलाफ कोई अपील उपर्युक्त अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और स्वर्ण (नियंत्रण) अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष दायर की जा सकेगी।

अभिहित सेनगुप्त, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 27th July, 2004

Final Findings

Subject: Sunset Review of Anti-Dumping imposed on import of Styrene Butadiene Rubber (SBR) 1900 series originating in or exported from Japan, Korea RP and USA.

.....

No. 15/5/2003-DGAD - Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 thereof:

A. PROCEDURE

1. The procedure described below has been followed subsequent to the initiation of sunset review investigations:
 - (a) The Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) initiated the Sunset Review investigation of Anti Dumping Duty imposed on imports of Styrene Butadiene Rubber (SBR) 1900 series originating in or exported from Japan, Korea RP and USA pursuant to the final findings of the mid-term review investigations notified vide notification No. 34/1/2000-DGAD dated 3rd July 2001. The review covers all aspects of Final Findings (review) notification no. 34/1/2000-DGAD dated 3rd July 2001.
 - (b) The Designated Authority notified the initiation of this Sunset Review via notification no. No. 15/5/2003-DGAD dated 30th July, 2003 with regard to anti-dumping investigations concerning imports of Styrene Butadiene Rubber (SBR) 1900 series originating in or exported from Japan, Korea RP and USA and forwarded a copy of the Initiation Notification to the known interested parties, who were requested to furnish their views, if any, on the said findings within forty days from the date of the letter;
 - (c) The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known exporters and industry associations (whose details were made available by the applicants) and gave them an opportunity to make their views known in writing in according with the rule 6(2);
 - (d) The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known importers and consumers of SBR in India (whose details were made available by the applicants) and advised them an opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the letter.

- (e) The Authority sent a questionnaire, to the following manufacturers of SBR in the subject countries, in accordance with the rule 6(4). These companies, however, have not filed any response to the exporters questionnaire:-

- ♦ Ameripol Synpol Company,
146, High Stgreet,
Akron, Ohio 44308
USA.
- ♦ Korea Kumho Petrochemical Co. Ltd.
Kumho Building # 57 Slumunnol-Ga,
Jongro Gu,
Seoul Korea.
- ♦ M/S Nippon Zeon Company Ltd.,
Furukawa Sogo Building,
6-1 Marunouchi 2-chome,
Chiyoda-ku,
Tokyo 100
Japan.
- ♦ M/S JSR Corporation,
2-11-24-Tsukji,
Chuo-ku,
Tokyo 104,
Japan.

- (f) The Embassies of Japan, Korea RP and USA in New Delhi were informed about the initiation of the review in accordance with rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter and questionnaire sent to the exporters was also sent to the Embassies, alongwith a list of known exporters/producers. None of the exporters/producers, however, filed any response to the exporters questionnaire.

Vide letter dated 9th / 10th December, 2003, the Authority requested M/s. Rishiroop Polymers Pvt. Ltd., an importer of the subject goods who were authorised by M/s. Korea Kumho Petrochemical Company Ltd. (KKPC) to represent them in all matters pertaining to this investigation, to file a complete non-confidential version of the exporters response. Vide letter dated 22nd March, 2004, it was reiterated by the Authority that under the WTO ADA, M/s. KKPC is required to furnish a complete response to the exporters questionnaire with a non-confidential summary thereof which had not been submitted by them. They were also requested to provide all export invoices relating to KKPC's exports of KOSYN KHS - 68 during the period of investigation. M/s.

KKPC was advised to furnish a complete response to the exporters questionnaire with a non-confidential summary thereof by 5th April, 2004.

The Authority notes that M/s. KKPC did not file a response to the exporters questionnaire with a non-confidential version thereof. M/s. Rishiroop Polymers Pvt. Ltd., Mumbai did not file a response to the importers questionnaire.

(g) A questionnaire was sent to the following importers and/or consumers of SBR in India calling for necessary information in accordance with rule 6(4);

- ◆ Paragon Rubber Industries,
P.B.No. 61, Matteethra Building,
Baker Junction, Kottayam,
Kerala
- ◆ Texim International,
1-3 A, Talco Indl. Estate,
Madhavaram,
Madras 600 060
- ◆ Bykoff Rubber Inds,
Chelembra P.O.,
Malapuram Dist.,
Kerala - 673 634
Tele: 0494-401163
- ◆ Malaya Trade Impex P.Ltd.,
'Rubber Bhavan', Malaya Corner,
M.C.Road, Kodimatha,
Kottayam,
Kerala
- ◆ Jossco Rubbers,
8/50, Moonalingal,
Calicut 673 032
- ◆ Paragon Polymer Products P. Ltd.,
Kanakagiri Village,
Kakkapalayam PO,
Salem 637 504
- ◆ Leader Rubber Inds,
Industries Development Pot,
West Hill (Koxikode),
Calicut, Kerala

- ♦ Veeksay Rubber Inds,
VII/248, NH-17, Nallalam,
Panchayat, Kolathara P.O.,
Kozithode,
Kerala
- ♦ Safar Rubbers,
B.No. VI/37, Aykkarappadi,
P.O. Mallappuram,
Kerala
- ♦ Kerala Footwear Products,
Calicut Times Xomplex,
Railway Station Link Road,
Calicut, Kerala
- ♦ Arihant Rubber & Chemicals,
159, Rabindra Sarani,
Calcutta 700 007
- ♦ Chemi Colour Agency,
12, Bonfield Lane,
Calcutta 700 001
- ♦ Viking Rubbers P Ltd.,
VII/612, Matha Shopping Arcade,
Thodupuzha,
Kerala
- ♦ Bombay Pigments & Allied Products,
Palathinal Building,
M.C. Road,
Kottayam,
Kerala
- ♦ Neo Rubber Foot Crafts P Ltd.,
Matha Shopping Arcade,
Thodupuzha Idukki District,
Kerala
- ♦ Footcare Rubber Inds,
VIII/5749(B), P.B. No. 3,
Parathode, Kanjirapa,
Kottayam Distt.,
Kerala

- ♦ Preston India P. Ltd.,
45-A1, 2nd Phase,
Peenya Indl. Area,
Bangalore - 560 058
 - ♦ Maharastra Trading Corporation,
137, Raudat Tahera Marg,
137, Raudat Tahera Marg,
Mumbai -3
 - All India Rubber Industries Association,
Northern Region,
New-Delhi- 110 008
- (h) The Authority provided an opportunity to all interested parties to present their views orally on 7th June, 2004. All parties presenting views orally were requested to file written submissions of the views expressed orally at the time of the public hearing. The parties were advised to collect copies of the views expressed by the opposing parties and offer rejoinders, if any.
- (i) The Authority made available the public file to all interested parties containing non-confidential version of all evidence submitted and arguments made by various interested parties;
- (j) The arguments raised by the petitioners and other interested parties have been appropriately dealt with in these findings; the written submissions and rejoinders submitted by the domestic industry, exporters and importers in the oral hearing held by the Authority on 7th June 2004 have been considered by the Designated Authority on merits in order to arrive at a final determination.
- (k) Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) to provide details of imports of the subject goods. Request was also made to DGCI&S, Kolkata to provide details of transaction-wise imports made in India of the said article during the period of investigation alongwith Bills of Entry numbers and dates, country of origin, description of the imported subject goods, volume and value of import and the names and addresses of the importers.
- (l) The investigation of dumping and injury covered the period from 1st April, 2002 to 31st March, 2003 (12 months) which is referred to as the 'period of investigation' or the 'POI'. The examination of trends relevant for the analysis of injury covered the years from 1999-2000 to the period of investigation (injury analysis period).
- (m) In accordance with Rule 16 supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties and comments received on the same, have been duly considered in these findings. Comments from M/s Rishiroop Polymers representing M/s Korea Kumho, the exporter from Korea

RP have been considered in these findings. The Authority notes that the domestic industry have not offered their comments on the disclosure statement as they have informed the Authority vide letter dated 26th July, 2004 that they have preferred a writ petition before the Hon'ble High Court at New-Delhi which was filed on 26th July 2004.

- (n) *** In this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority upon being satisfied as to its confidentiality, under the Rules.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION

2. The product under investigation is all grades of Styrene Butadiene Rubber (SBR) 1900 series classified under customs heading nos. 3903.90 and 4002.19 of the Customs Tariff Act, 1975 originating in or exported from Japan, Korea RP and USA. The original investigation concluded vide notification dated 2/6/99 recommended duty on SBR 1500, 1700 & 1900 series. However, scope of duty was restricted to SBR 1900 series vide mid term review notification dated 3rd July 2001.
3. The classification is, however, indicative only and in no way binding on the scope of the present sunset review investigations.

Views expressed by Exporter on Product Under Consideration:

4. M/s. Rishiroop Polymers Pvt. Ltd. (an importer representing the exporter of the product under consideration from Korea RP) vide their letter dated 7th October, 2003 made certain confidential submissions regarding the subject investigations including the export of KHS-68 during the review POI. The Authority had requested for a non-confidential version of the exporter's response and of the letter dated 7th October, 2003 which was submitted on 17th May, 2004. Vide this response, the exporter enclosed copies of non-confidential version of their confidential letter dated 7th October, 2003. They have also stated therein that the Annexures submitted to the letter dated 7th October, 2003 are not amenable to summarisation as they are confidential in nature.
5. As regards the product under consideration, the importer, M/s. Rishiroop Polymers has submitted that KKPC, the exporter from Korea RP did not export any Styrene Butadiene Rubber 1900 series to India during the POI. Consequently, KKPC did not dump any SBR 1900 series in India during the review POI and no dumping margin exists for it.
6. It has been additionally submitted that KKPC did export 410 MT of Styrene Butadiene Co-Polymer Resin under their brand name KOSYN KHS-68 having styrene content of 68% during the review POI. In this regard, the Designated Authority has already held in the original investigation that the product KOSYN KHS-68 is a synthetic resin falling under Customs sub-heading no. 3903.90 and was not the product under consideration. Since this product does not fall under SBR 1900 series, KKPC has not submitted any details in this behalf.

7. In view of the foregoing, it has been submitted that since KKPC did not export the product under investigation during the sunset review POI, it does not consider it necessary or relevant to submit any of the responses to the exporters questionnaire excepting Appendix 7 to show the state of affairs of KKPC during the review POI. Thus the data as per Appendix 7 of the exporters questionnaire has been enclosed in confidential form.

Examination by Authority

8. The Authority has taken note of all material on its records as regards KHS-68 being a member of SBR 1900 series, known in popular parlance as High Styrene Rubber or HSR. The Authority has also noted the submissions of the exporter in its response to the disclosure statement, as regards the product under consideration. In this connection, the Authority recalls its views on product under consideration in the final findings dated 2nd June, 1999 and final findings of the mid-term review dated 3rd July, 2001. The contention of the exporter that KHS-68, is not the product under consideration and therefore, not the subject matter of this investigation has been dealt with in detail in the earlier mid-term review findings
9. The Hon'ble CEGAT noted in its decision dated 2.2.2000 that antidumping duty is on all grades of SBR, whether falling under sub-heading 4002 or 3903. Customs authorities have to impose duty on all types of SBR, irrespective of their classification.
10. Since the purpose of a sunset review, as set out in the aforesaid provisions, is limited to the requirement to examine if the cessation of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury, the Authority confirms the findings on product under consideration as considered in the earlier final and review findings.

C. LIKE ARTICLE

11. Rule 2(d) of the anti-dumping rules specifies that "Like Article" means an article which is identical or alike in all respects to the product under investigation or in the absence of such an Article, another Article, having characteristics closely resembling those of the articles under examinations.
12. There is no argument disputing that SBR 1900 produced by the domestic industry has characteristics closely resembling the imported product and is substitutable by the SBR imported from the subject countries both commercially and technically.
13. SBR 1900 series produced by the domestic industry has been treated as Like Article to the product exported from Japan, Korea RP and USA, within the meaning of Rule 2(d).
14. The Authority confirms the earlier final and review investigations findings on Like Article.

D. Domestic Industry

15. M/s Apar Industries Ltd. Apar House, Corporate Park, Sion-Trombay Road, Chembur, Mumbai- 400 071 and M/s Apcotex Lattices, Ltd. Mumbai, were considered the Domestic Industry in the earlier notification. The Authority has considered these companies as constituting the domestic industry in accordance with the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury), Rules 1995.

E. Period of Investigation:-

16. The period of investigation for the purpose of the present sunset review is 1st April 2002 to 31st March 2003 (12 months).

F. Submissions made by Exporters:

M/s. Korea Kumho Petrochemical Ltd. (KKPC) / M/s. Rishiroop Polymers Pvt. Ltd.

1. KKPC is a multi-product, multi-locational manufacturing company producing styrene butadiene rubber, acrylonitrile rubbers, butadiene rubbers, solution SBR, thermoplastic rubbers, synthetic resins, rubber chemicals, SB resins and electronic materials etc.
2. SBR, NBR and SB resins are produced by KKPC at their Ulsan facilities whereas the polybutadiene rubber, solution SBR, thermoplastic rubber, butadiene and steam are produced at their Yaesu plant facility. Additionally KKPC produces synthetic resin such as polystyrene, SBS, etc. at an independent location and also produces rubber chemicals at a separate location.
3. The data submitted by KKPC for the period of investigation of April 2002 to March 2003 in Appendix 7 clearly shows no production or sales of SBR 1900 series. The data shown therein concerns the production and sales of SBR falling under 1500 and 1700 only. Furthermore in the said Appendix 6, the data is submitted for Styrene Butadiene Co-Polymer Resin "SB-Resin".
4. Since KKPC did not export any 1900 series during the review POI, the Authority has to examine the future likelihood of dumping and consequential likelihood injury, if any, to the domestic industry in the event the anti-dumping measures in force are revoked. The analysis of this future likelihood of dumping has to be seen in the light of various factors concerning KKPC alone for which we make the following submissions hereunder:
 - a) KKPC has not exported any SBR 1900 series to India for more than two years and has no intention to do so and could not cause or threaten any injury to the domestic industry in any foreseeable future.
 - b) KKPC has no plan for expansion of its existing facilities at Ulsan for SBR production and as submitted in Appendix 7 attached hereto the total polymer

production (SBR, NBR and SB Resin) capacity at Ulsan plant is *** MT against which the total polymer production has been of the order of *** MT during the review POI which translate into an operating ratio of *** of the installed capacity. It is submitted that this being the case it is evident that KKPC has sufficient orders and market for other grades of SBR, NBR and SB Resins all of which are produced at the Ulsan facility in different production lines. Thus KKPC does not have any surplus capacity or inventory for production of SBR 1900 series in the foreseeable future so as to cause or threaten to cause any large scale exports to India consequential likelihood of any potential injury or threat of injury to the domestic industry.

- c) At Annexure C to this KKPC submit the audited statement of income and balance sheet for the calendar year 2002 which constitute its fiscal year. The statement of income clearly show that KKPC is a profitable company and did not incur any losses during the calendar year 2002. Furthermore, it is submitted that all operations of KKPC during the quarter during January 2003 to March 2003 were profitable.
- d) At Annexure D the basis for determination of the Exchange Rate of USD vs. Korean Won for POI has been enclosed.

G. Submissions made by Importers:

(I) All India Rubber Industries Association

1. In the mid-term review Final Findings the Designated Authority has enlarged the scope of the product under consideration so as to read "all grades of SBR 1900 series viz., High Styrene Resin Masterbatch..." which is objectionable.
2. High Styrene Resin Masterbatch is a very wide term which includes not only Styrene Butadiene Rubber of Chapter 40 but also High Styrene Resins of Chapter 39.
3. The domestic industry has not disclosed essential facts in their application to the Designated Authority. They have kept most of the vital information like import figures, production volume of SBR as 'Confidential'.
4. Both Apar and Apcotex have a very high operating rate for their plant capacity utilisation and did not have any drop in production or sales during the period of investigation as compared with the earlier period.
5. On the one hand the footwear industry under the present melt down conditions is facing future challenge from China and other South Asian countries and on the other hand its basic raw material has been subjected to anti-dumping duty.
6. The product under investigation is used mainly in the footwear industry, which is used by the common masses. Footwear caters to the weaker sections of society. 98% of its units are in the small-scale sector.

(II) Paragon Rubber Industries

1. The company is a manufacturing unit located in Kottayam. It is engaged in the manufacture of Rubber Hawaii Chappals.
2. The synthetic rubber SBR HS-860 imported by them is manufactured by M/s. Zeon Corporation, Japan and they deal through M/s. Mitsubishi Corporation who is the sole selling agent for them in the Asia Pacific region.
3. The details regarding imports have been furnished. The Company has imported a quantity of *** kg for a cif value of Rs. *** during the POI. The unit cif price is Rs. ***/kg and the landed value works out to Rs. ***/kg.
4. The Company has also procured a quantity of *** kg. from indigenous manufacturers. The unit price works out to Rs. ***/kg.

(III) Viking Rubbers Pvt. Ltd.

1. The company is an importer of SBR 1900 series.
2. The quantities imported by them from Japan have been furnished by them. The Company has imported a quantity of *** kg for a cif value of Rs. *** during the POI. The unit cif price is Rs. ***/kg and the landed value works out to Rs. ***/kg. The imported product has been used for manufacturing Rubber Hawaii Chappals.
3. The Company has also procured a quantity of *** kg of a value of Rs. *** from Apcotex Lattices in 2000-01. The unit price works out to Rs. ***/kg. In 2001-02 a quantity of *** kg was procured from Apcotex Lattices for a value of ***. The unit price works out to Rs. ***/kg. A quantity of *** kg of a value of Rs. *** was procured from M/s Apar Industries. The unit price works out to Rs. ***/kg.

H. DUMPING:-**Exporters and Producers of the Subject Goods in the Countries of Origin:-**

17. The Authority sent questionnaires to the known exporters from the subject countries in terms of section 9 A (1). Exporters have not responded by way of furnishing information in response to the exporters questionnaire forwarded to them by the Authority. There are therefore no claims made by the exporters in the subject countries with regard to Normal Value and Export Price. The Authority has therefore been constrained to rely upon 'facts available' with regard to Normal Value and Export Price respectively.
18. M/s Korea Kumho (through M/s Rishiroop, Polymers) has submitted that the Designated Authority did not make any request for verification of data submitted by

KKPC in the confidential form and it is understood that the Designated Authority has accepted data to the extent submitted by KKPC as accurate and appropriate.

19. The Authority notes that the main purpose of an on-the-spot investigation is to verify the information provided in response to the exporters' questionnaire and to obtain further details, if necessary. In the present sunset review investigations, M/s Korea Kumho did not file a response to the exporters questionnaire. The Authority therefore considers M/s Korea Kumho to be non-co-operative. M/s KKPC in its submissions stated that since it did not export the product under investigation during the sunset review POI, it did not consider it necessary or relevant to submit any of the responses to the exporters questionnaire excepting Appendix 7 to show the state of affairs of KKPC during the review POI. Thus the data as per Appendix 7 of the exporters questionnaire was enclosed in confidential form. The exporter subsequently clarified that it was not amenable to summarisation. The accuracy and appropriateness of the data could not be ascertained by the Authority as an exporter's verification could not be carried out in the absence of a complete response to the exporters questionnaire in all respects. In the absence of a complete response to the exporters questionnaire as a result of which an on-the-spot verification was not made possible, the Designated Authority was unable to accept data to the extent submitted by KKPC as accurate and appropriate under the WTO ADA and the anti-dumping Rules.

Normal Value:-

Korea RP

20. The Authority notes that M/s Korea Kumho has not participated in this sunset review investigation by way of furnishing a response to the exporters questionnaire as requested by the Designated Authority. M/s. Rishiroop Polymers Pvt. Ltd. vide their letter dated 7th October, 2003 made certain confidential submissions regarding the subject investigations including the export of KHS-68 during the review POI. The Authority had requested for a non-confidential version of the exporter's response and of the letter dated 7th October, 2003 which was submitted on 17th May, 2004. Vide this response, the exporter enclosed two copies of non-confidential version of their confidential letter dated 7th October, 2003. They have also stated therein that the Annexures submitted to the letter dated 7th October, 2003 are not amenable to summarisation as they are confidential in nature.
21. It has been additionally submitted that KKPC did export 410 MT of Styrene Butadiene Co-Polymer Resin under their brand name KOSYN KHS-68 having styrene content of 68% during the review POI. It has been submitted by M/s KKPC that since they did not export the product under investigation during the sunset review POI, it did not consider it necessary or relevant to submit any of the responses to the exporters questionnaire excepting Appendix 7 to show the state of affairs of KKPC during the review POI. Thus the data as per Appendix 7 of the exporters questionnaire has been enclosed in confidential form.

22. In the absence of participation by M/s KKPC by way of furnishing a complete response to the exporters questionnaire the Authority has been constrained to rely on 'facts available' in its determination of normal value of the subject goods in Korea RP. In this connection the Authority notes that, the exporter has, in its written submissions dated 19th June 2004, stated that KKPC has cooperated in several proceedings before the Designated Authority and the data on its cost for SBR and NBR for several years is available in the record of previously concluded investigations including the latest submissions made by KKPC which covers the costs of SBR operation as well. KKPC has stated that the Authority can determine the cost to make and sell SBR 1900 series for KKPC from the confidential submissions made by them before the Authority. In its examination the Authority has constructed the normal value for the subject goods based on information available.
23. In the absence of participation by exporters from Korea RP by way of furnishing a complete response to the exporters questionnaire, the Authority has been constrained to rely on 'facts available' in its determination of normal value of the subject goods in Korea RP.

The domestic industry vide its submissions dated 16th July and 21st July, 2004 has contested the methodology adopted by the Designated Authority in its determination of normal value for the subject goods in Korea RP. The Designated Authority has considered the replies given by the domestic industry on merits in order to construct the normal value in Korea RP.

The raw material costs have been determined as per international prices for styrene and butadiene for the POI. The raw material price works out to USD *** /MT. The consumption norms have been adopted as per domestic industry norms. The quantum of SGA and finance cost, as assessed from the Annual Report 2002 of Korea Kumho, works out to USD *** /MT and USD *** /MT respectively. The profit element works out to *** % of sales.

The normal value for the subject goods in Korea RP is, therefore, determined to be USD *** /MT.

Japan

23. The applicants have submitted evidence of normal value in Japan from 'The Japan Chemical Week'. According to the Japan Chemical Week, the price of SBR, high styrene (60%) ranged between Yen ***-*** during the POI. However there is no variation in this price which also appears to be unrealistically high when compared to Korea and USA. The Authority has been therefore constructed the cost of the subject goods in Japan based on 'facts available'.
24. The normal value for the subject goods in Japan is therefore determined to be USD ***/MT.

USA

25. The Authority observes that the exporters from USA have not responded to the questionnaire in the prescribed format and have not furnished information relating to normal value, export price, and dumping margin. The Authority therefore considers the exporters to be non-cooperative and has proceeded on best available information.
26. The applicants have requested that the normal value in USA be accepted on the basis of constructed cost of production of SBR 1900 series. In the circumstances the Authority has been constrained to determine the constructed cost. The Authority has considered the international prices of raw materials during the POI as per available data and normative conversion cost of the most efficient domestic producer. After adding a reasonable profit, the normal value in USA is therefore considered to be USD ***/MT.

Export Price:**Korea RP**

27. As per information on imports available with the Authority, the weighted average cif price of the subject goods works out to USD ***/MT. The Authority has considered adjustments as available in its records. After considering ocean freight as USD ***/MT and marine insurance as USD ***/MT the fob price works out to USD ***/MT. Commission is considered as ***(USD ***/MT), packing as USD ***/MT and inland freight as USD ***/MT. After considering the aforesaid adjustments, the ex-factory export price is considered to be USD ***/MT or Rs ***/MT.

Japan

28. M/s Paragon Rubbers and M/s Viking Rubbers have responded to the importers questionnaire in these proceedings. M/s Paragon Rubber Industries which is engaged in the manufacture of Rubber Hawai Chappals, has furnished details regarding imports made by them of synthetic rubber SBR HS-860 manufactured by M/s. Zeon Corporation, Japan through M/s. Mitsubishi Corporation. The Company has imported a quantity of ***kg for a cif value of Rs. *** during the POI. The unit cif price is Rs. ***/kg and the landed value works out to Rs. ***/kg.
29. M/s Viking Rubbers Pvt. Ltd., an importer of SBR 1900 series, has imported a quantity of ***kg for a cif value of Rs. *** during the POI from Japan. The unit cif price is Rs. ***/kg and the landed value works out to Rs. ***/kg. The imported product has been used for manufacturing Rubber Hawai Chappals.
30. Based on the information furnished by these importers, the Authority notes that the weighted average cif import price works out to Rs ***/kg. As per Polymers, Plastics and Rubber Trade Intelligence (PPR) data the cif import price is Rs ***/kg. The Authority has gone by PPR data which is slightly higher and covers the entire POI. The Authority has considered adjustments as available in its records. Adjustments have been made for ocean freight (USD ***/MT), marine insurance at ***(USD ***/MT)

and commission at ***% (USD ***/MT) and inland freight (***/MT). The ex-factory export price therefore works out to USD ***/MT or Rs ***/MT.

USA

31. The Authority notes that as per transaction-wise data from the DGCIS, the cif price of the subject goods is abnormally high and as per PPR data the prices are very low. No importer of the subject goods from the USA has responded to the importers questionnaire and provided information on import prices from the USA in these proceedings. In the absence of cooperation from exporters and importers, the Authority has allowed reasonable adjustments while arriving at the export price.
32. On the basis of available import data, the Authority has considered the weighted average cif import price of the subject goods as USD ***/MT. After considering ocean freight as USD ***/MT, marine insurance at ***% (USD ***/MT), inland freight at ***% (USD ***/MT), and commission at ***% (USD ***/MT), the ex-factory export price works out to USD ***/MT or Rs ***/MT.

Dumping Margin:

33. The Authority has followed the consistent policy of adopting the principles governing the determination of Normal Value, Export Price and Margin of Dumping as laid down in Annexure I of the anti-dumping rules. Based on the ex-factory normal values and export prices as indicated above, the Authority assessed the dumping margins in case of all exporters from Korea RP, Japan and USA as given in the table below:-

Country	Producer/Exporter	Dumping Margin (%)
Korea RP	All exporters/producers	8.55 %
Japan	All exporters/producers	12.94 %
USA	All exporters/producers	49.96 %

Likelihood of continuation or recurrence of dumping

34. In accordance with Section 9 (A) 5 of the Customs Tariff Act, it is necessary to examine whether the expiry of the measures would be likely to lead to a continuation or recurrence of dumping and injury. In examining whether there is a likelihood of a continuation or recurrence of dumping, the Authority has verified whether dumping exists at present and if such dumping is likely to continue or recur.
 1. Exports of the subject goods to India were found to be made at dumped prices during the POI. The dumping margins determined for this sunset review investigation from Korea RP and Japan were found to be lower than that determined in the previous original and mid-term review investigations.

2. In examining whether dumping was likely to continue in significant quantities, certain information were analysed. In these investigations, exporters/producers from the subject countries have not cooperated by filing response to the exporters questionnaire. In the absence of any cooperating company, the analysis of imports was based on available data.
3. As per available data, it is seen that in the post POI period, a quantity of 720.08 MT, 216.35 MT and 135.39 MT was exported from Korea RP, Japan and USA, respectively.

Projection for Future Imports

1. Korea Kumho Petrochemical Co. Ltd., which is one of the producers of the subject goods in Korea RP has an annual synthetic rubber production capacity of approximately *** tonnes. The dedicated capacity for SBR alone is *** tonnes. This has enabled them to develop into one of the leading companies in the world synthetic rubber industry.
2. Five synthetic rubber producers account for over one third of total world capacity. These include the Goodyear Tire & Rubber Co. & Japan Synthetic Rubber Corporation (JSR). Other major players include Ameripol Synpol Corporation and Korea Kumho. As per US Industry and Trade Outlook®, many in the Synthetic Rubber Industry believe that capacity in South Korea could be as great as three times domestic demand with more scheduled to come on line. This would mean that there is still significant capacity available for export production which could potentially be used to increase exports to India in the event of expiry of the measures.
3. Having regard to the current price levels in the Indian market and to the fact that imports have continued to come in from the subject countries throughout the injury analysis period, it is likely that exporting producers would continue to sell at dumped prices in order to regain their lost market shares.
4. There is nothing to suggest that dumping margins or dumped exports determined for the POI would disappear or decrease should the measures be allowed to expire. This is likely in view of substantial capacities in the exporting countries and the fact that no producer/exporter has cooperated with the Authority in these investigations.

INJURY:-

35. Under Rule 11, Annexure-II of the Anti-Dumping Rules, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, "taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such article..." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to

examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

36. Annexure II(iii) under Rule 11 further provides that in case where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti-dumping investigations, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, only when it determines that the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two per cent expressed as a percentage of export price and the volume of the imports from each country is three per cent of the imports of the like article or where the export of the individual countries is less than three per cent, the imports cumulatively account for more than seven per cent of the imports of the like article, and cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic article.
37. The Authority notes that the margin of dumping and quantum of imports from the subject countries are more than the limits prescribed in Rule 11.
38. The Authority notes that imported products from the subject countries concerned are alike in all essential, physical and technical characteristics. Imported products and those produced domestically are interchangeable and were marketed in India during the same period through comparable sales channels and the domestic producers and exporters sell the like product to the same category of customers.
39. For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such further indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, quantum of sales, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II (iv) of the rules.

(a) Quantum of Imports (as per Polymers, Plastics and Rubber Trade Intelligence):

	1999-2000		2000-01		Qty: MT 2001-02		Unit Price: Rs./kg 2002-03	
	Qty	cif	Qty	cif	Qty	cif	Qty	cif
Individual Country Imports as per PPR (MT) Chapter 39 & 40								
Korea RP	2277.603	37.12	708.788	39.75	86.5	42.43	258.61	43.17
Japan	2353.392	39.38	2150.434	40.57	2204.78	44.69	2329.78	43.90
USA	181.257	40.85	20.63	38.19	79.27	32.30	159.61	27.60
Total (subject countries)	4812.252	38.36	2879.852	40.35	2370.55	43.87	2748	42.88
Other Countries	136.96	36.17	1147.351	40.86	591.74	41.81	32.32	41.93
Total Imports under Chapters 39 & 40	4949.212	38.30	4027.203	40.50	2962.29	45.03	2780.32	42.87

40. As per Polymers, Plastics and Rubber Trade Intelligence (PPR) data, the total imports of the subject goods as per Chapters 39 and 40 have come down from a level of 4949 MT in 1999-2000 to 2780 MT in 2002-03.
41. From the transaction-wise data made available by DGCIS, it is seen that a quantity of 340,600 kg was imported from Korea RP under Chapters 39 and 40 for a value of Rs 14197522 or Rs 41.68/kg. A quantity of 1585,904 kg was imported from Japan for a value of Rs 68334836 or Rs 43.09/kg. A quantity of 14,718 kg of the subject goods was imported from the USA for a value of Rs 23,43,253 or Rs 159.21/kg which is an abnormal price. The total quantity reported by DGCIS is therefore 1941MT as compared to 2780.32 MT reported by PPR data. The Authority has, therefore, relied upon PPR import data. Data from secondary sources and from DGCIS was made available in the public file.

(b) Demand :-

	Qty:MT			
	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
Sales				
Sales of Indian Industry	9060	12832	14031	13960
Total Imports	4949	4027	2875	2780
Imports (Subject Countries)	4812	2879	2370	2748
Imports (Other sources)	137	1148	591	32
Demand	14009	16859	16906	16740
Share of domestic industry (petitioners) in Demand %	64.67%	76.11%	82.99%	83.39%
Share of imports %	35.33%	23.89%	17.00%	16.61%
Share of dumped imports %	34.35%	17.08%	14.02%	16.42%
Share of Korea RP	16.26%	4.20%	1.53%	1.54%
Share of Japan	16.79%	12.75%	13.78%	13.92%
Share of USA	1.29%	0.12%	0.94%	0.95%
Domestic Production	9223.529	12,469.553	14809.23	13642.54
Share of Korea Imports relative to Production	24.69%	5.68%	0.58%	1.90%
Share of Japan Imports relative to Production	25.52%	17.25%	14.89%	17.08%
Share of USA Imports relative to Production	1.97%	0.17%	0.54%	1.17%
Share of Imports from subject countries relative to Production	52.17%	23.10%	16.01%	20.14%
Share of Imports from subject countries relative to Consumption	34.35%	17.08%	13.95%	16.42%

42. There was an increase in demand from 14009 MT in 1999-2000 to 16859 MT in 2000-01. Thereafter there has been no significant change in demand. The domestic industry's share in demand has increased from 64.67% in 1999-2000 to 83.39% in 2002-03 (POI).

Share of dumped imports has fallen in demand from 34.35% in 1999-2000 to 16.42% in the POI.

43. Dumped imports have declined by 32.82 percentage points in relation to production and by 17.93 percentage points in relation to consumption in the POI.

(c) Actual and Potential Decline in Market Share:

44. To illustrate the changes in market share the data has been tabulated in the following way:

		Qty (MT)			
		1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-2003
Domestic Production	A	9223.529	12,469.553	14809.23	13642.54
Dumped Imports	B	4812.25	2879.852	2370.55	2748
Other Imports	C	136.96	1147.351	591.74	32.32
Total (A+B+C)	D	14173	16497	17772	16423
Change in Market Share					
Change in D			+ 2324	+ 1275	- 1349
Change in A			+ 3246	+ 2340	- 1167
Change in B			- 1932	- 509	+ 377
Change in C			+ 1010	- 556	- 559
%Share held by					
Domestic production		65.08%	75.59%	83.33%	83.07%
Dumped Goods		33.95%	17.46%	13.34%	16.73%
Other Imports		0.97%	6.96%	3.33%	0.20%

45. The above table shows that the domestic availability for the subject goods has increased over the years though it declined by 7.87% in the period of investigation. The domestic industry market share has increased by 17.99 percentage points over the period 1999-2000 till 2002-03. The market share of dumped imports declined by 17.22% over the same period. The market share lost by dumped imports has been gained by domestic industry.

(d) Production and Capacity Utilisation:-

	1999-2000	2000-01	2001-02	2002-03
Installed Capacity (MT)				
Domestic Industry (Total Capacity)	15,550	17,800	18,400	18,400
Production (MT)				
Domestic Industry (Total production)	9223.529	12,469.553	14809.23	13642.54
Capacity utilisation %				
Domestic Industry (Capacity Utilisation)	59.32%	70.05%	80.48%	74.14%

46. Capacity utilisation for the subject goods has improved. The average capacity utilisation of the domestic industry was lowest in 1999-2000 when the volume of dumped goods were at the highest. Capacity utilisation improved thereafter corresponding with the decline in volumes of dumped imports. Level of consumption has also increased over this period leading the domestic industry to invest in new capacity and achieve higher levels of capacity utilisation.

(e) Sales realisation and landed price of imports

Year	Wt. Avg. Net Sales Realisation of domestic industry (Rs/kg)	Rs/kg (Indexed)			
		Landed Price of Imports			
		Korea RP	Japan	USA	Others
1999-00	100.00	100.00	100.00	100.00	100.00
2000-01	117.12	106.99	103.06	93.39	113.03
2001-02	112.89	111.40	110.62	77.15	112.86
2002-03 (POI) w/o anti-dumping duty	113.88	112.69	108.10	65.44	108.94
2002-03 (POI) with existing anti-dumping duty		132.40	122.41	82.12	—

47. Landed prices from the subject countries, without anti-dumping duty, continue to be significantly below the weighted average net sales realisation of the domestic industry.

(f) Price undercutting

Year	Wt. Avg. Net Sales Realisation of domestic industry (Rs/kg)	Rs/kg (Indexed)		
		Landed Price of Imports		
		Korea RP	Japan	USA
1999-00	100.00	100.00	100.00	100.00
2000-01	117.12	106.99	103.06	93.39
2001-02	112.89	111.40	110.62	77.15
2002-03 (POI)	113.88	112.69	108.10	65.44

48. The extent of price undercutting from Korea RP, Japan and the USA is in the range of 5% to 45%.

(g) Price Underselling

Year	SBR 1900 Series	Landed Price of Imports			Price Underselling %		
		Korea	Japan	USA	Korea	Japan	USA
2002-03 (POI)	***	***	***	***	***	***	***
Non-injurious price of domestic industry	***	***	***	***	***	***	***

Price underselling was in the range of 12% to 50%.

(h) Profitability:-

Petitioner	1999-00	2000-01	2001-02	(Rs. per kg) Indexed
				2002-03 (POI)
Cost of Production				
Domestic Industry	100.00	113.93	88.02	103.66
Selling price				
Wt. Avg. NSR	100.00	117.12	112.89	113.88
Trend Indexed				
Profit & Loss				
Domestic Industry	(100.00)	(93.20)	73.51	(37.30)
Trend Indexed				

49. The above table shows that the cost of production increased in 2000-01 from the level of 1999-2000. The raw material cost increase takes place almost every year due to increase of monomer prices in the international market. Monomer is the key raw material for the subject goods and accounts for about 85% of the total raw material cost. In 2000-01, production costs increased as compared to the previous year and significant price undercutting continued by imports from the subject countries. Therefore, in spite of higher sales realisation, the domestic industry incurred significant losses. In the same year, demand increased as compared to the base year and the domestic industry increased its sales volumes. However, on the price front, it continued to incur losses as in the year 2000, dumping of the subject goods continued from EU and Poland on which anti-dumping duties were recommended in April, 2001.
50. In 2001-02, raw material prices came down significantly from Rs ***/MT to Rs ***/MT. The degree of price undercutting from the subject countries was low as compared to the previous year in the injury analysis band. In the POI this was reversed and the industry again suffered losses which however was lower and improved as compared to losses in 2000-01. Raw material prices went up to Rs ***/MT, an increase of about Rs ***/MT from the level of 1999-2000. The level of price undercutting also increased as compared to the previous year.
51. In the POI, the Domestic industry's share in demand was 83.39%, an increase of 18.72 percentage points as compared to the base year. The share of dumped imports declined from 34.35% in 1999-2000 to 16.42% in 2000-01 i.e., the decline was by 17.93 percentage points as compared to the base year. This shows that in spite of significant price undercutting the domestic industry was able to gain market share and regain the market taken by dumped imports as with anti-dumping duty, price undercutting was

offset in the case of Korea RP and Japan. However, in the case of USA, it is seen that significant price undercutting persists even with anti-dumping duty.

(i) Closing Stocks of Domestic Industry:

	Qty: MT (Indexed)			
	1999-2000	2000-01	2001-02	2002-03
Closing Stocks of domestic industry	100.00	31.20	174.08	113.66

52. The Authority finds no co-relation between the level of stocks held by the domestic industry and their sales volume and profitability position.
53. Closing stocks have been compared with the sales quantum of the domestic industry and indicated as a percentage thereof in the table below:

(j) Sales of Domestic Industry:-

	Indexed			
	1999-2000	2000-01	2001-02	POI
Sales (MT)				
Total Sales of Domestic Industry	100	141.63	154.87	154.08
Closing Stocks				
Closing Stocks of domestic industry	100	31.20	174.08	113.66
Inventory as a percentage of sales in a range				
Domestic Industry	5-10%	1-6%	5-10%	1-6%

54. It may be seen that though Closing Stocks increased in absolute term, however as a percentage of Sales, closing stocks decreased as compared to the base year.

(k) Return On Investments

	Rs. Lacs (Indexed)			
	1999-2000	2000-01	2001-02	2002-03 (POI)
Capital Employed (Rs. lacs) considering net block				
Domestic Industry	100.00%	96.62%	100.77%	95.00%
Profit/Loss				
Domestic Industry	-100.00%	-170.14%	447.30%	-45.28%
Return on Capital Employed %				
Domestic Industry	-100.00%	-176.02%	443.90%	-47.56%

55. Since losses have decreased, the negative return on investment has also come down. The domestic industry has not yet reached a situation of positive return on investment.

(l) Cash Flow/Profit

	1999-2000	2000-01	2001-02	Indexed 2002-03 (POI)
Profit/Loss (Rs/Lacs) of Domestic Industry	(100.00)	(129.85)	145.73	(9.72)
Depreciation (Rs/Lacs) of Domestic Industry	61.44	57.68	57.66	56.17
Cash Flow (Rs/Lacs) of Domestic Industry	(38.56)	(72.17)	203.40	46.45

56. Although losses of domestic industry have come down in the POI as compared to the base year, it is seen that the domestic industry is still incurring losses. Cash flow has improved but has come down in comparison to the previous year.

(m) Employment and Wages

	1999-2000	2000-01	2001-02	Value: Rs Lacs (Indexed) 2002-03 (POI)
Employment (permanent)				
Domestic Industry	100.00	100.00	90.83	92.20
Wages				
Domestic Industry	100.00	101.25	112.29	123.33

57. The level of employment has declined by about 7.79% as compared to 1999-2000. Wages show an increase of about 23.32% in three years (from 1999-2000 to the POI) which means an average increase of less than 10% which is considered as normal wage increase. However, wage per kg of production in the POI declined by Rs *** as compared to 1999-2000.

58. The above information has been depicted as follows:

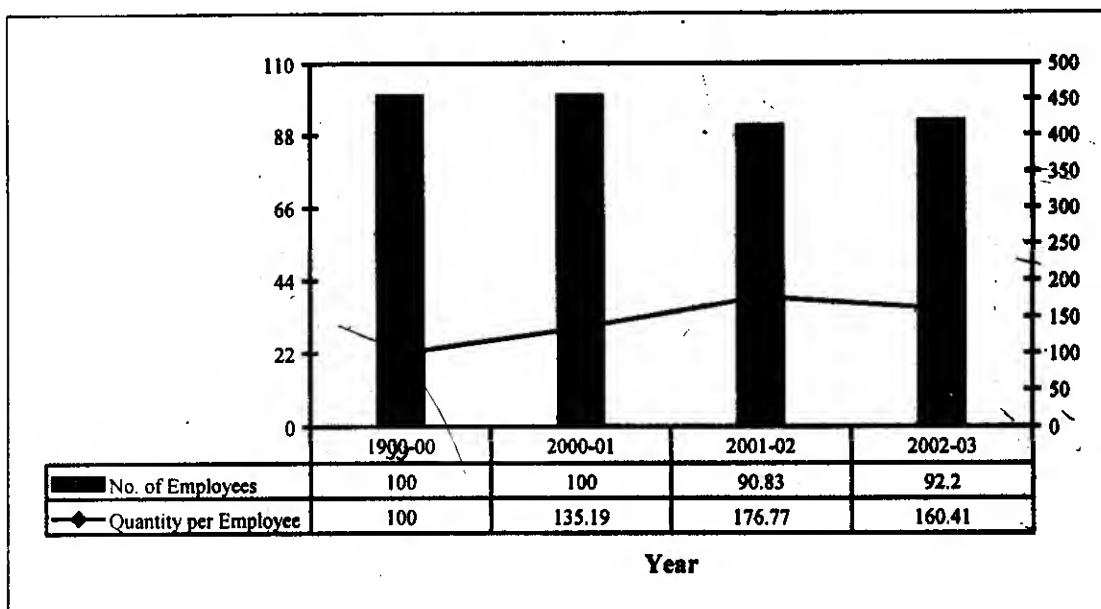
	1999-2000	2000-01	2001-02	Indexed 2002-03 (POI)
No. of employees	100.00	100.00	90.83	92.20
% Change		0.00%	-9.17%	1.52%
Total Sales (Domestic Industry)	100.00	141.63	154.87	154.08
Volume of sales per Employee (MT)	100.00	141.63	170.50	167.11

59. It is seen from the above that there has been an overall increase in volume of sales per employee.

(n) Productivity

	1999-2000	2000-01	2001-02	Indexed 2002-03 (POI)
Production (MT)				
Domestic Industry	100.00	135.19	160.56	147.91
No. of Employees (Total)	100.00	100.00	90.83	92.20
Production per employee (MT) Domestic industry (total)	100.00	135.19	176.77	160.41

60. This has been projected in the following graph:



61. The above graph indicates that productivity per employee has increased over the years which is indicated in increased production and sales volumes due to the efforts made the domestic industry to optimize production and reduce employment and due to the anti-dumping duty in force. Productivity in the POI has however declined as compared to the previous year. In spite of increased productivity and the imposition of anti-dumping duty, the financial performance of the domestic industry in terms of profits deteriorated in the POI and the industry continued to incur losses.

Likelihood of continuation or recurrence of injury

62. In accordance with Section 9 (A) 5 of the Customs Tariff Act, it is necessary to examine whether the expiry of the measures would be likely to lead to a continuation or recurrence of dumping and injury. In examining whether there is a likelihood of a continuation or recurrence of injury, the Authority has verified whether injury exists at present and if such injury is likely to continue or recur. With respect to the injury

determination, it is seen that the condition of the domestic industry has improved with the imposition of the anti-dumping duty, which has therefore, had the desired effect.

1. Throughout the entire period of the duration of the duty on imports from the subject countries, substantial price undercutting took place. The export prices at duty paid level i.e. including the anti-dumping duty were below the non-injurious price of the domestic industry which was established in the original investigation (***— Rs. ***/MT) and which determined the level of duty.
2. The situation of the domestic industry following the imposition of the duties in the first year of the application of the measures, deteriorated again, in particular, from 2000-01 due to the injurious dumping from EU and Poland.
3. The importer has claimed that the injury to the domestic industry has been due to factors other than dumping which include (i) decrease in customs duty; (ii) lower demand for SBR 1900 series due to higher NR prices; (iii) shifting of usage pattern for end product to EVA/LDPE based products; and (iv) conditions of competition between domestic producers.
4. Reduction in customs duty would result in changes in the landed price of imports. While customs duty may have decreased over the analysis period, it is noted that the landed prices from the subject countries are in the same range. The Authority has considered the levels of landed price. The landed values from the subject countries increased during the injury analysis period as compared to the base year with exemption of US imports and did not decline as a result of decline in the customs duty. Reduction in customs duty is not a factor of injury that is required to be segregated.
5. Article 3.5 of the WTO ADA provides for "trade restrictive practices of and competition between foreign and domestic producers" as a relevant causal link parameter. It does not provide for competition amongst domestic producers as a causal link parameter. The two constituent units of the domestic industry have been selling at comparable price levels.
6. Shifting usage pattern should affect the domestic industry and foreign producers equally. The data analysed by the Authority does not show that the domestic industry's production capacity has been reduced by an amount which is approximately equal to a reduction in consumption which could have indicated that a change in consumption pattern had been the cause of reduced sales. In the present case, demand, domestic production and sales of Indian industry have all increased.
7. The importers have also raised an issue that Apcotex Lattices has been making profit whereas the other constituent unit of the domestic industry i.e. M/s. Apar Industries has been incurring losses even after imposition of anti-dumping duty. The domestic industry was given protection for increasing prices to the level of Rs. ***/MT but was not able to increase prices beyond Rs. ***/MT due to inter-

se competition. The Authority notes that M/s Apcotex Lattices manufactures several grades of lattices for various industries such as tyre industry, paper/board coating industry, textile industry, carpet and construction industry. The profit shown in the annual report is for the company as a whole and not for the subject goods. As far as increasing prices are concerned, Domestic industry has not been able to pass on increased input costs to the consumers in the face of dumped imports. Input costs have increased but exporters have maintained the same level of export prices since 99-00.

8. The net sales realisation of the domestic industry in the POI was Rs ***/kg. If anti-dumping duty is revoked, NSR would decline to the extent of price undercutting i.e., by ***% or to Rs ***/kg. Raw material prices have increased from Rs ***/MT in 99-00 to Rs ***/MT in 2002-03. The Selling price of the domestic industry should therefore be approximately Rs ***/kg keeping raw material prices in view. However if anti-dumping duty is revoked, domestic industry would be forced to sell at Rs ***/kg (assuming no further increase in raw materials). Total losses would therefore amount to Rs *** crores, assuming no decline in volume of sales from the level of POI.

In view of the above, it is concluded that should the duty be repealed, injury is likely to continue.

CONCLUSION ON INJURY AND CAUSAL LINK

63. The Authority notes that certain economic indices having a bearing on the state of the domestic industry have shown improvement in the period of investigation. However, the domestic industry continues to be in a situation of losses.
64. The improvement in any economic parameter has occurred as a result of the existing anti-dumping duties in force. The Authority notes that it would be inappropriate to hold that if anti-dumping duty is revoked, the imports from the subject countries would cease to cause material injury to the domestic industry. The material injury to the domestic industry is likely to continue as imports of the subject goods continued to enter the domestic market at dumped prices during the injury analysis period and the POI. These dumped imports undercut the domestic industry's net sales realisation and were lower than the non-injurious price of the domestic industry determined for the POI. The Authority concludes that the improvement, if any, in some of the economic parameters affecting the domestic industry does not warrant removal of anti-dumping duty.

J. FINAL FINDINGS:

65. The Authority after considering the foregoing, concludes that:
- (a) Styrene Butadiene Rubber (SBR) 1900 series originating in or exported from Korea RP, Japan and USA has been exported to India below normal value, resulting in dumping;
 - (b) the domestic industry is suffering material injury;
 - (c) dumping of the subject goods is continuing from the subject countries
 - (d) the material injury to the domestic industry may continue and intensify if anti-dumping duty is removed.
66. It is therefore considered appropriate to recommend continuation of the anti-dumping duties in force on imports of Styrene Butadiene Rubber (SBR) 1900 series originating in or exported from Korea RP, Japan and USA. The revised duties may come into force from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government. The anti-dumping duty shall be the amount mentioned in Col. 3.

1. Country	2. Name of Producer/Exporter	3. Amount (USD/kg)
Korea RP	All producers/exporters	0.0689
Japan	All producers/exporters	0.1045
USA	All producers/exporters	0.197

67. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.
68. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act, 1975, as amended in 1995.

ABHIJIT SENGUPTA, Designated Authority

DESIGNATED AUTHORITY